देवयज्ञ

[हवन यज्ञ पर वैज्ञानिक विचार, विभिन्न रोगों की तथा दैनिक प्रयोग की ऋतु-अनुकूल हवन सामग्री के नुसखों सहित]

—लेखक—

सरकार से अनेक बार पुरस्कृत एवं सम्मानित, टी० बी० की अचूक चिकित्सा के आविष्कारक,

स्वर्गीय पूज्य

डा० श्री फुन्दनलाल जी अग्निहोत्री

एम० डी०, डी० एस०, एम० आर० ए० एस० (लंदन), इत्यादि

मेडिकल आफ़िसर टी० बी० सेनेटोरियम।

प्रकाशक

स्वास्थ्य भंडार

वैशाली नगर, जयपुर (राज.)

संपादक :

(स्व.) डॉ.श्री रवीन्द्र अग्निहोत्री

एम० ए०, एम.एड., पी.एच.डी, रिसर्च स्कालर,

एवं

डॉ. धुरेन्द्र शास्त्री अग्निहोत्री

बी.एम.एस., एम.डी.(ए.एम.), एम.डी.(नेचुरोपैथी), ए.आई.ए.सी.एच.(ग्रीस)

वैशाली नगर, जयपुर (राज.)

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण सन् १९४१ ई०,

पूर्णतः संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण सन् १९६५ ई०

सॉफ्ट कॉपी 2026

मूल्य : निशुल्क डाउनलोड

उपोद्घात

इस पुस्तक का प्रथम संस्करण 'प्रचार विभाग आर्य समाज, भूड़, बरेली' द्वारा सन् 1941 ई० में प्रकाशित हुआ था। पुस्तक बहुत लोकप्रिय हुई। इसकी आवश्यकता को अनुभव करके पूज्य स्व० महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज, सेठ हरशरणदास जी रईस (गाज़ियाबाद), सेठ श्रीनिवासदास जी पोद्दार (कलकत्ता), श्री दीनानाथ जी अग्रवाल बी० एस-सी० (हरदा, म० प्र०), श्री राजकुमार जी सक्सेना स्टेशन मास्टर आदि विभिन्न सज्जनों के सहयोग से इसका पुनर्मुद्रण होता रहा।

'स्वास्थ्य भंडार' पूज्य पिता जी की निजी संस्था थी जिसके द्वारा वह प्रथम क्षय रोग की अचूक चिकित्सा, और पश्चात् अन्य कठिन रोगों की अचूक चिकित्सा की खोज करते रहे। अधुना यह संस्था 'सार्वदेशिक गोकृष्यादि रक्षिणी सभा (रजि०) लखनऊ' का साहित्य एवं चिकित्सा विभाग है। अब इस संस्था द्वारा पूज्य पिता जी के अनुसंधान का जनता में प्रचार किया जा रहा है तथा आय का एक निश्चित अंश उक्त गो० सभा द्वारा गोरक्षा एवं गोसंवर्धन के पुनीत कार्य में व्यय किया जा रहा है क्योंकि उक्त सभा के कार्य का पूज्य पिता जी के अनुसंधान से घनिष्ठ सम्बन्ध है।

'देवयज्ञ' के इस संस्करण में मैंने अपने द्वारा अनुदित पूज्य पिता जी के दो लेख भी बढ़ा दिए हैं। आशा है पाठक इन्हें उपयोगी पाएँगे और पूर्ववत् ही पुस्तक का स्वागत करेंगे। ओ३म् शम्।

—रवीन्द्र अग्निहोत्री

1965

अनुक्रमणिका

अध्याय	विषय	पृष्ठ
1.	देवयज्ञ	9
2.	संक्रामक रोग तथा देवयज्ञ	16
3.	रोग से रक्षा और देवयज्ञ	22
4.	देवयज्ञ और कठिन रोग	29
5.	हवन सामग्री तैयार करने के नियम एवं अन्य आवश्यक बातें	30
6.	एक बड़ी भूल और उसका उपाय (ऋतुअनुकूल हवन सामग्री)	33
7.	विभिन्न रोगों की हवन सामग्री के नुसखे	37
8.	हवन करने की विधि एवं मंत्र	40

नम्र निवेदन

माननीय सम्पन्न पाठक वृन्द,

पूज्य डा० साहब के साहित्य के अध्ययन से आपको 'यज्ञ चिकित्सा' की आश्चर्यजनक उपयोगिता पता चलेगी। हमारा निवेदन है कि स्वास्थ्यप्रद विविध स्थानों पर इस चिकित्सा-विधि के स्वास्थ्यगृह (सेनेटोरियम) खुलवाने में सहायता दें ताकि निर्धन रोगी भी इससे लाभ उठा सकें। ऐसे स्वास्थ्यगृह के साथ एक अच्छी गोशाला अति आवश्यक है।

लखनऊ में सार्वदेशिक गोकृष्यादि रक्षिणी सभा (रजि०) ने इस कार्य के लिए भी भूमि क्रय कर ली है। वहाँ भवन निर्माण एवं अन्य आवश्यक सामग्री के लिए आपके सहयोग की प्रतीक्षा है।

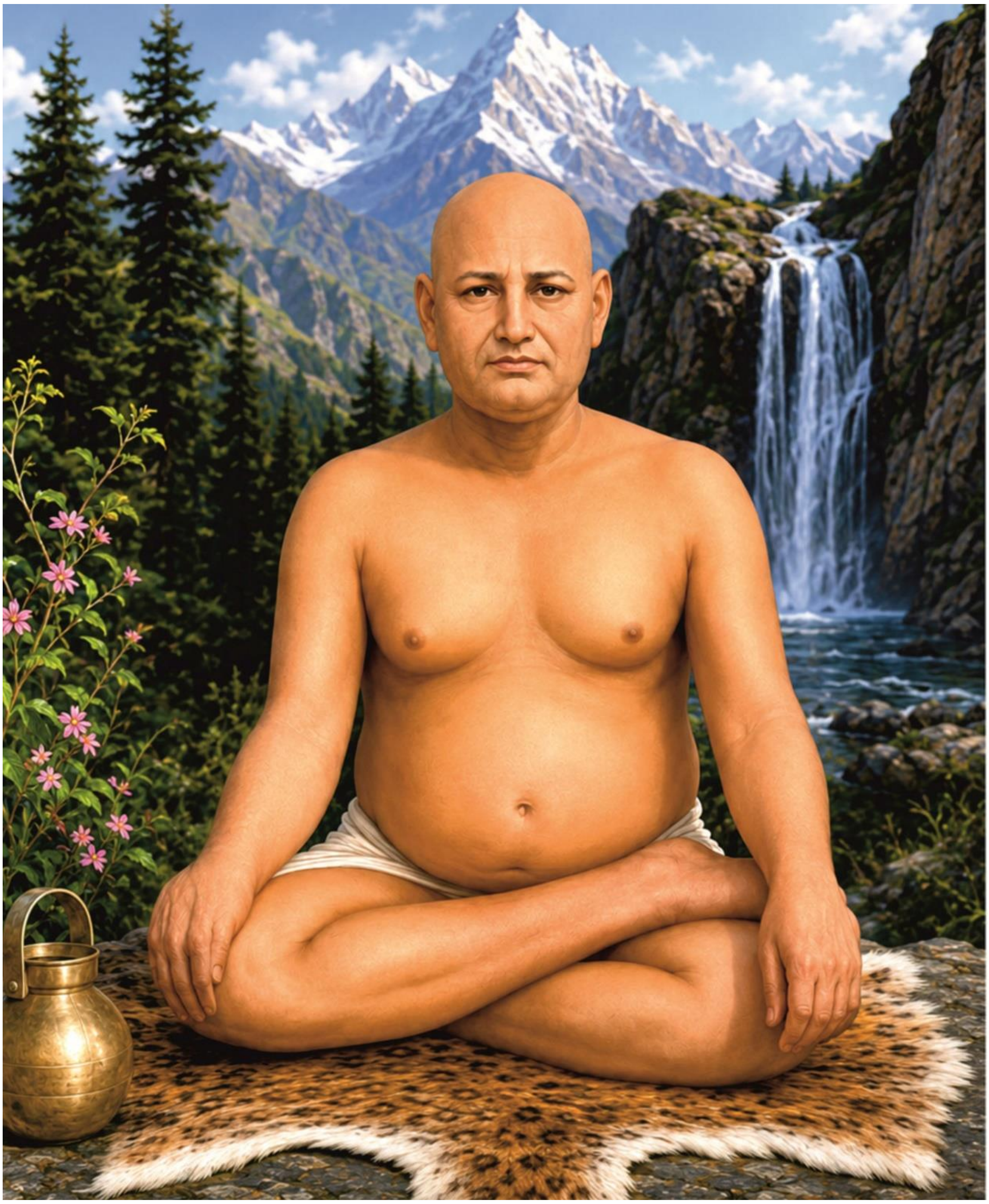

वेद का प्रत्येक सिद्धांत प्राकृतिक नियमों पर आधारित सिद्ध करने वाले, प्राचीन संस्कृति का पुनरुद्धार करने वाले, हवन-यज्ञ को सर्वरोगनाशक बताने वाले, बाल ब्रह्मचारी, तपस्वी, योगी, संसार का कल्याण चाहने वाले, जगद्गुरु, आचार्य ऋषि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती।

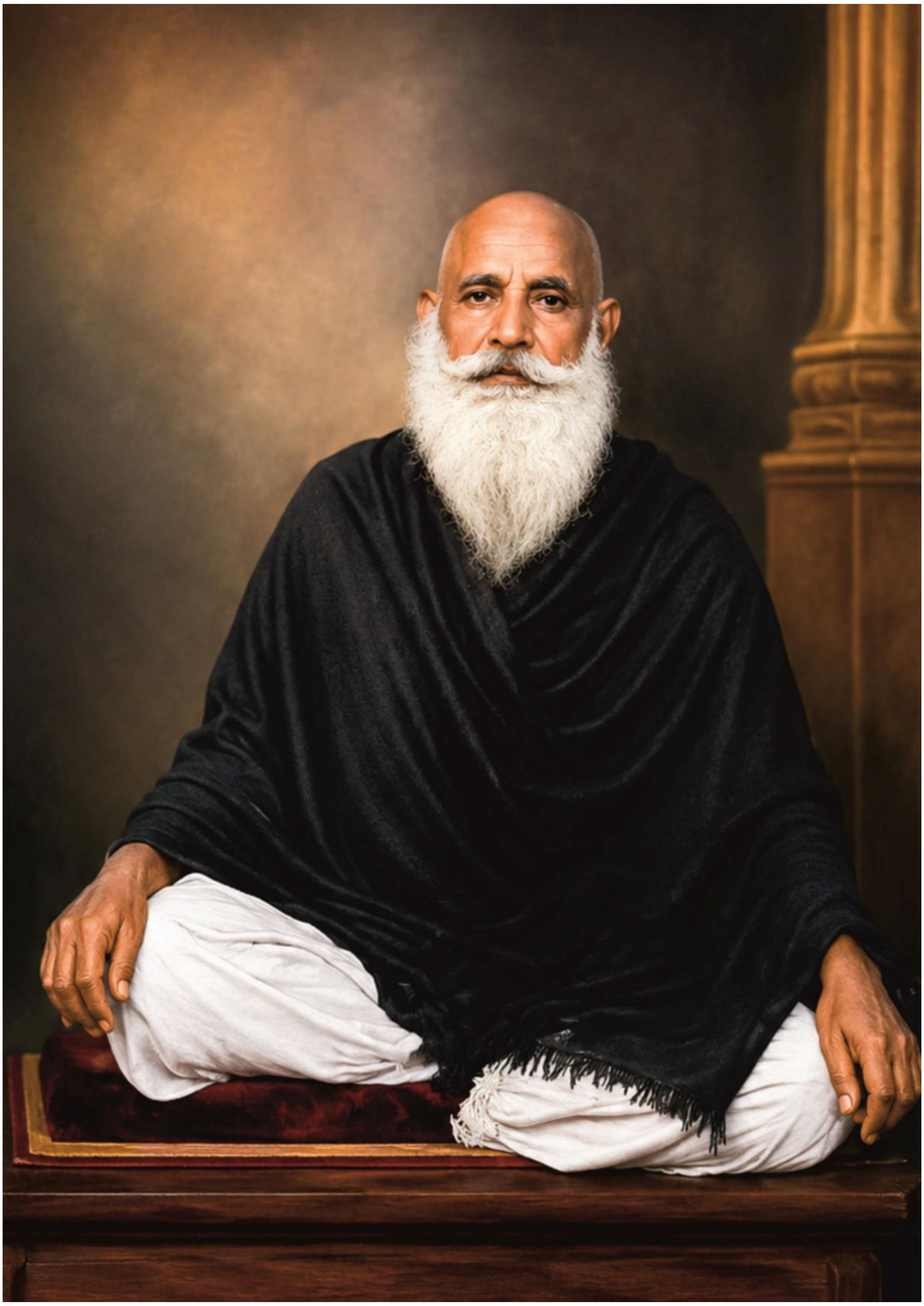

हवन-यज्ञ की वैज्ञानिकता को आधुनिक विज्ञान द्‌वारा सत्य प्रमाणित करने वाले, तथाकथित असाध्य रोगों की हवनयज्ञ द्‌वारा सफल चिकित्सा करने वाले, ऋषिवर दयानन्द जी के अनन्य भक्त डॉ. फुन्दनलालजी अग्निहोत्री एम.डी. (लंदन)।

क्षयरोग की अचूक चिकित्सा के आविष्कारक

स्व. डा. श्री फुन्दनलालजी अग्निहोत्री एम.डी.

(श्री ठा० परम सिंह जी एम्० ए०, भूतपूर्व चीफ प्राइवेट सेक्रेट्री
पूज्य स्व० डाक्टर साहब)

—०—

श्री डाक्टर साहब का विख्यात ग्रंथ 'यज्ञ चिकित्सा' जब प्रकाशित हुआ तो 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' ने उसकी समालोचना करते हुए अपने 13 अप्रैल 1953 के अंक में लिखा –

“इस युग में जबकि यज्ञ आदि क्रियाओं पर से विश्वास उठता जा रहा है, 'यज्ञ चिकित्सा' को 'क्षय रोग की प्राकृतिक अचूक चिकित्सा' मानने को संभवतः दस बीस व्यक्ति भी सहमत न हों; किंतु लेखक द्वारा उपस्थित तथ्यों तथा युक्तियों में इतना बल है कि वे शंकाशील तथा अन्यमनस्क पाठक को भी अपनी ओर आकर्षित किए बिना नहीं रह सकतीं। ....' आदि।

इस पुस्तक की इसी प्रकार की समालोचनाएँ देश के अन्य तमाम समाचार पत्रों में निकलीं। विद्वानों ने प्रशंसा के एवं साधुवाद के पत्र लिखे। 'यज्ञ चिकित्सा' द्वारा जबलपुर टी० बी० सेनेटोरियम में चीफ मेडिकल आफीसर रहते हुये पूज्य डाक्टर साहब ८०% से भी अधिक रोगी आरोग्य कर चुके थे; अतः कुछ श्रद्धालुओं ने (जिनमें राजर्षि टंडन जी भी एक थे) सुझाव दिया कि चूंकि विश्व में प्रथम बार मनुष्य को क्षय जैसे जानलेवा रोग पर विजय प्राप्त हुई है अतः इस पुस्तक का अंग्रेजी संस्करण प्रकाशित होना चाहिये ताकि इससे अंग्रेजी भाषी भी लाभान्वित हो सकें और पुस्तक 'नोबुल पुरस्कार' के लिये भी प्रेषित की जा सके। इस संबंध में पूज्य डा० साहब ने जो उत्तर दिया वह उनकी महानता का द्योतक, हिंदी प्रेम और देश भक्ति का अप्रतिम उदाहरण है। उन्होंने कहा– 'हिंदी का प्रचार करने के लिये आवश्यक है कि महत्वपूर्ण ग्रंथों की रचना केवल हिंदी में हो ताकि हिंदी

गौरवान्वित हो और हम डंके की चोट कह सकें कि हिंदी में वे ग्रंथ हैं जो अंग्रेजी में हैं ही नहीं। जो सम्मान आज अंग्रेजी को प्राप्त है, कालान्तर में इसी प्रकार हिंदी को प्राप्त होगा। लोग ऐसे ग्रंथों को पढ़ने के लिये ही हिंदी सीखेंगे; और नोबुल पुरस्कार! लगभग १७ लाख रु० मेरी निजी कमाई और पैतृक सम्पत्ति का खोजकार्य में अब तक व्यय हो चुका है। वह सारा धन भी यदि आप मुझे दे दें तो भी मैंने जो अपना जीवन इस साधना में घुला दिया है क्या वह मिल सकता है? भारत की मर्यादा पुरस्कार की नहीं त्याग की है। चांदी के चंद टुकड़ों के लिये मैं देश की मर्यादा नष्ट कर दूं?'

देश की मर्यादा के इस प्रहरी का जन्म अब से ८५ वर्ष पूर्व उ० प्र० के पीलीभीत नामक स्थान में हुआ था। आपके पूज्य पिता जी एक प्रसिद्ध वकील थे। पर पितृ-सुख तो आपके भाग्य में केवल १३ वर्ष तक के लिये ही था। उसके बाद तो परिवार का भार आपको वहन करना था। अपने गुरु बा० शिवव्रतलाल जी वर्मन एम्० ए० तथा श्री स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज के सदुपदेशों से राष्ट्र-प्रेम की जो अग्नि आपके हृदय में प्रज्ज्वलित हुई वह महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के साहित्य के अध्ययन से और भी तेजी से धधकने लगी। आपने प्रोग्राम बनाया कि अपने एकमात्र छोटे भाई को पू० पिताजी के समान उच्च कोटि का वकील बनाकर परिवार का भार उसे सौंप स्वातंत्र्य संग्राम में आज़ादी से भाग लेंगे, पर 'कर्ता के मन कछु और है साईं के कछु और।' इस विचार को मूर्त रूप देने से पूर्व ही वह भाई भी चल बसा। पारिवारिक दायित्व अब और भी जटिल एवं गुरुतर हो गये। इनके प्रति सजग रहते हुये आपने देश सेवा के लिये अपने चिकित्सा-क्षेत्र को ही चुन लिया।

सन् १९०४ ई० में उन्होंने क्षय रोग की अचूक चिकित्सा की खोज का प्रण किया था; और एक वर्ष नहीं, दो वर्ष नहीं, तीन वर्ष नहीं, पूरे पच्चीस वर्ष सफलता प्राप्ति तक वे इस कठोर साधना में लगे रहे। इस साधना की सिद्धि के

लिये उन्हें कितने कठोर व्रत करने पड़े इसे वे सभी लोग जानते हैं जिन्होंने उनके जीवन को निकट से देखने का प्रयत्न किया।

× × × ×

भगवद् विभूतियाँ उन्हें खूब मिली थीं। आकर्षक रूप, नियमित प्राकृतिक जीवन से सुघटित स्वास्थ्य, विलक्षण मेधा शक्ति, प्रत्युत्पन्न मति, चिन्तनशील मस्तिष्क, ओजस्वी वाणी, दर्याद्र हृदय, उद्भावना शक्ति संपन्न बुद्धि– सब तरह से सिरजनहार ने उन्हें सँवारा था। उनका जीवन अत्यन्त सरल और सादा था। ढीला-ढाला खद्दर का कुर्ता, धोती और हाथ में अपने शरीर की तरह पतली छड़ी; पर मुख-मंडल पर मार्त्तण्ड का तेज ऐसा जैसे घटाओं के चक्रव्यूह को भेद ज्योतिर्मय आलोक बिखर रहा हो। उनके दर्शन से लगता था जैसे भारतीय संस्कृति का अध्याय सामने खुला हो, जैसे आदर्श, त्याग और नैतिकता का संगम हिलोरें ले रहा हो; जैसे गंभीरता और धीरता का मेरु अचल खड़ा हो।

पूज्य डाक्टर साहब उन महाप्राण सज्जनों में से थे जो उदधि के समान विशाल बहुमुखी जीवन धारण करते हैं और उस जीवन-सागर का जब-जब मंथन होता है तब बिष तो स्वतः पी जाते हैं और अमृत जगत को दान में दे दिया करते हैं। उनके जीवन को परिभाषा, व्याख्या और संस्मरणों की संकुचित परिधि में नहीं समेटा जा सकता। उनके जीवन की प्रत्येक घटना प्रेरणा की शक्ति से ओतप्रोत है।

साहित्य सेवा और लेखन की विशिष्ट प्रवृत्ति उनमें प्रारंभ से ही रही। वे लगभग १६-१७ वर्ष की आयु से लेकर मृत्युपर्यन्त नित्य प्रातः दो बजे से उठकर लेखन-कार्य, वैज्ञानिक खोज-कार्य, प्राणायाम का अभ्यास आदि किया करते थे। विद्यार्थी जीवन में ही 'ईश प्रार्थना' नाम से एक भजन-पुस्तिका का उन्होंने संकलन और संपादन किया था। यह उनकी पहली पुस्तक थी और उसके बाद पुस्तक लिखने का काम आजीवन चलता रहा। हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू आदि में छोटे-बड़े सब मिलाकर आपने लगभग ३०० ग्रंथों की रचना की। इनमें वैज्ञानिक ग्रंथों के

अतिरिक्त ऐतिहासिक ग्रंथ भी हैं जिनमें भारत के सच्चे इतिहास की खोज का सराहनीय प्रयास किया गया है। उन्होंने कितने लेख लिखे, इसकी गणना मैं नहीं कर सका। वैदिक धर्म, कल्याण, आर्यमित्र, आयुर्वेद सुधानिधि, आर्यवीर, आर्यगजट, गोधन, अहिंसा, गोरक्षण, प्राकृतिक जीवन, यूनिवर्सल मदर, लीडर, पायोनियर, भारत, आज, प्रताप और भी न जाने कितने पत्रों में आपके लेख बराबर छपते ही रहते थे। जब भी किसी पत्र ने उनका लेख मांगा उन्होंने बिना किसी प्रकार का पारिश्रमिक लिए लेख दिया।

जीवन के अंतिम वर्षों में उनका हिंदी-प्रेम अपनी चरम सीमा को पहुंच चुका था। सन् 1961 ई० में दिल्ली के 'कान्स्टीट्यूशन हाउस' में व्याख्यान के लिये उन्हें निमंत्रित किया गया। वहाँ जाना तो उन्होंने स्वीकार कर लिया पर अंग्रेजी में भाषण की मांग को उन्होंने राष्ट्र भाषा हिंदी का अपमान कहकर ठुकरा दिया। यहां यह बता देना अप्रासंगिक न होगा कि डाक्टर साहब अंग्रेजी के भी अच्छे विद्वान थे और कई बार अंग्रेजी में व्याख्यान भी दे चुके थे।

भारतीय संस्कृति और उसके आधार-स्तंभ वेदों पर उनकी अगाध श्रद्धा कदाचित् प्रारंभ से ही थी। वैज्ञानिक खोज-कार्य के अनुभव ने उनकी इस श्रद्धा को और भी दृढ़ बना दिया। उनके एक ग्रंथ 'आयुर्वेदिक प्राकृतिक चिकित्सा' का आठ पृष्ठीय आमुख लिखते हुए स्व० श्री मावलंकर साहब, अध्यक्ष लोकसभा ने उनकी इस मनोवृत्ति का उल्लेख इन शब्दों में किया है–

'...........लेकिन उन्होंने हरेक चीज वेदों में थी ऐसा प्रस्थापित करने का जो प्रयास किया है उसमें मुझे तो शास्त्रीय पद्धति से ज्यादातर उनका वेदों पर का प्रेम और भक्ति मालूम होती है। जो उन्होंने कहा है वह सब वेदों में हो या न हो लेकिन वह सत्य है और उनकी बात को स्वीकार करने से ही भारत जैसे गरीब देश में बिना खर्च या बहुत थोड़े खर्च से जनता के आरोग्य का और बीमारियों के उपचार करने का सवाल आसानी से और ऊंचे ढंग से और शास्त्रीय रीति से हल हो सकता है.....................' आदि।

पूज्य डाक्टर साहब नियमत: प्रशिक्षित ऐलोपैथिक और होम्योपैथिक डाक्टर थे, पर यह उनकी भारतीय संस्कृति और वेदों पर अगाध श्रद्धा का परिणाम था कि क्षय रोग की अचूक चिकित्सा के आविष्कार द्वारा सांसारिक यश, वैभव और प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए उसे डाक्टरी भाषा में 'गैस ट्रीटमेंट' आदि के स्थान पर 'यज्ञ-चिकित्सा' की संज्ञा देकर उन्होंने यज्ञ भगवान को प्रतिष्ठित करना श्रेयस्कर समझा। उनकी इस खोज का सिक्का विदेशियों पर भी पड़ा। अमेरिका के प्रसिद्ध डाक्टरों ने क्षय रोग की चिकित्सा के लिए इस चिकित्सा-सिद्धांत को सर्वश्रेष्ठ कहकर स्वीकार किया है और 'गेस ट्रीटमेंट' पर वहां के डाक्टर अभी और खोजकार्य कर रहे हैं।

अपने साधु स्वभाव के कारण उन्हें अपने जीवन में किसी से घृणा थी तो वैभव और लिप्सा से। उन्होंने बाज़ार की अपनी जमी हुई प्रेक्टिस को केवल इसलिये छोड़ दिया कि इससे सायंकाल की सन्ध्या और यज्ञ के कार्यक्रम में व्याघात पड़ता था। एक बार 'भारत' में छपे उनके लेखों पर उन्हें पुरस्कार प्राप्त हुआ; पर मना करने पर भी जब वह उनके पास भेज ही दिया गया तो उन्होंने उसे संकट-ग्रस्त एक दम्पत्ति को दान कर दिया। रेडियो भाषण का पारिश्रमिक भी उन्होंने सर्वदा दान कर दिया। अपनी पुस्तकों पर उ० प्र० और म० प्र० सरकारों द्वारा दिए गए पुरस्कार भी उन्होंने दान ही कर दिए। पद-लोलुपता तो उन्हें छू भी नहीं गई थी। दो बार आनरेरी मजिस्ट्रेट बनाने का प्रस्ताव हुआ पर उन्होंने अस्वीकार कर दिया।

दिसम्बर मास की हड्डी कंपा देने वाली सर्दी और प्रातः ५ बजे की ठिठुरन। डा० साहब अपनी मित्र मंडली सहित भ्रमण को जा रहे थे। मार्ग में दलदल में फंसा एक घोड़ा देखा जो कदाचित् रातभर उसी स्थिति में रहने के कारण मरणासन्न हो रहा था। घोड़े को दलदल से निकालने की योजना बनाई गई। कुछ मित्रों ने हतोत्साहित किया, कुछ ने अपनी पोजीशन की दुहाई दी; पर सच्चे जन सेवक को इन बातों की क्या परवाह! डाक्टर साहब ने मित्रों को उत्साहित किया और घोड़े

को सड़क पर लाकर ही दम लिया। ठंड के कारण घोड़े की अकड़ी हुई अवस्था देखकर मि० डे कलक्टर के पास अपना संदेशा भेजकर उसे मवेशी अस्पताल पहुँचवाया। न पोजीशन का अभिमान ! न प्राणों का मोह ! ऐसा था उनका परोपकारी जीवन।

संसार की बड़ी से बड़ी शक्ति और बड़े से बड़े प्रलोभन उन्हें अपनी सच्चाई से डिगा नहीं सकते थे। राजा साहब पीलीभीत के 25,000 रु० के प्रलोभन को ठुकराकर वे केवल सत्य की रक्षा के लिए सन् 1937 के चुनाव में राजा साहब के मुकाबले में कांग्रेस के प्रत्याशी को विजयी बनाने के लिए उद्योगशील रहे और उन्हें पूर्ण सफलता मिली। किसी भी संकोच या दबाव के कारण वे जिसे ठीक समझते थे उसे कहने से नहीं रुक सकते थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज महात्मा नारायण स्वामी जी, कवीन्द्र रवीन्द्र, महात्मागांधी, श्री नेहरू जी राजर्षि टंडन, श्री मावलंकर साहब, डा० राजेन्द्र प्रसाद, नाग साहब चीफ़ जस्टिस हाईकोर्ट, राजा साहब शिवगढ़ आदि से हुई उनकी बातों के कुछ प्रसंग जिन्हें याद हैं वे उनके चरित्र की इस निर्भीकता, साहस, कुशाग्र मेधावी बुद्धि और प्रत्युत्पन्नमति से भली भांति परिचित हैं।

स्वाभिमान भी उनमें बहुत ऊंचे दर्जे का था। स्वतन्त्र भारत का राज्य भी अविकल रूप से उन्हें यदि इस स्वाभिमान के बदले में मिलता तो वे उसे भी ठुकरा देते। टी० बी० सेनेटोरियम कमेटी के प्रेसीडेण्ट के अवांछनीय हस्तक्षेप पर ही उन्होंने चीफ़ मेडिकल आफीसर के पद से क्षणमात्र में त्याग-पत्र दे दिया। उनके व्यक्तित्व की इस विशेषता का ध्यान आते ही उर्दू के कवि जोश की निम्नलिखित पंक्ति अनायास ही याद आ जाती है –

'टूट तो सकते हैं हम लेकिन लचक सकते नहीं।'

क्षय रोग के बढ़ते प्रसार का मूल कारण उन्होंने जनता के दैनिक जीवन में पौष्टिक एवं संतुलित भोजन (दूध, घी, मक्खन, फल आदि) का अभाव तथा अप्राकृतिक रहन-सहन निश्चित किया था। क्षय की चिकित्सा में यज्ञ के लिए

गोघृत की आवश्यकता होती है। जो आज सर्वथा दुष्प्राप्य हो गया है देश की इस दीन हीन दशा पर उन्हें बड़ा दुख हुआ। जिस देश में घी-दूध की नदियाँ बहती थीं, फलों के अम्बार लगे रहते थे, उसी देश के बच्चों को घी, दूध, फल के लिये तरसते देख उनका हृदय विदीर्ण हुआ जाता था। परिस्थिति पर गंभीरता से विचार करने पर उनका ध्यान गोरक्षा की ओर गया। अत: पिछले १२ वर्षों से वे गोरक्षा सम्बन्धी विशेष कार्य कर रहे थे। इस कार्य में देश के सभी गोभक्तों – पं० ठाकुर दास जी भार्गव, सेठ गोविन्द दास जी, महात्मा हरदेब सहाय जी, पं इन्द्र लाल जी शास्त्री, प्रधान सम्पादक 'अहिंसा', सेठ श्री निवास दास जी पोद्दार, पं महेश दत्त जी शर्मा सम्पादक 'गोरक्षण', पं श्रीपाद दामोदर सातवलेकर जी महाराज, पं० शिवदयालु जी आदि सभी का सहयोग उन्हें प्राप्त था। गत वर्ष ही उन्होंने 'राष्ट्रीय संन्यासी डा० अग्निहोत्री स्वामी' के नाम से संन्यास ग्रहण करके संन्यासाश्रम में प्रवेश किया था तथा 'सार्वदेशिक गोकृष्यादि रक्षिणी सभा (रजि०) लखनऊ' की स्थापना की थी और जैसा कि १६ दिसम्बर को लखनऊ रेडियो ने उनके निधन का समाचार प्रसारित करते हुए कहा था "'आयुर्वेदिक प्राकृतिक यज्ञ चिकित्सा' का प्रचार करना और मनुष्य को सच्चे अर्थों में मनुष्य बनाना उनका अब मुख्य उद्देश्य था।"

15 दिसम्बर 1962 को सायंकाल 4 बजे उनका स्वर्गवास अप्रत्याशित रूप से हो गया पर उन्हें अपनी अमरयात्रा का पूर्वाभास हो चुका था। 15 दिसम्बर को ही प्रातः उन्होंने दो अधूरे लेख पूरे कराए। डाक्टर साहब क्षयरोग और बवासीर के विशेषज्ञ थे और ये लेख भी इन्हीं रोगों से संबद्ध थे। डा० साहब अपने लिये नहीं विश्व के लिये जिये। उनके निधन से उनके आत्मीयों की ही नहीं उन सबकी अपार क्षति हुई है जो विश्व का कल्याण चाहते हैं और त्याग की प्रतिष्ठा करते हैं। हमारा दुर्भाग्य है कि पूज्य डा० साहब ने अपना नश्वर शरीर अभी त्याग दिया; परंतु अपने जीवन-काल में ही उन्होंने इतनी समृद्धि भारत माता के चरणों में अर्पित की है जो न केवल उन्हें यश: शरीर से चिरंजीवी बनाए रखेगी प्रत्युत भारत

को भी विश्व के वैज्ञानिकों को कुछ नए निराले रत्न दे सकने की क्षमता प्रदान करेगी। वे आदर्श डाक्टर की परिभाषा देने आए थे। यह मैं इसलिये कहने का अधिकारी हूँ क्योंकि मेरा उनसे सम्बन्ध प्रारंभ में एक रोगी और चिकित्सक का ही था; पर आज मुझे ऐसा लग रहा है कि जैसे मेरे ही 'पिता' का स्वर्गवास हो गया हो।

पूज्य डाक्टर साहब का पंचभौतिक शरीर पंच भूतों में मिल चुका। किंतु अक्षरों के व्यूह में सुरक्षित उनका अक्षर-शरीर अनेकों वर्षों तक अनेकों को प्रेरणाएं देता रहेगा, इसमें कोई संदेह नहीं। उनके उत्तराधिकारी पारिवारिक तथा सुहृद् जन शिष्य आदि उनके छोड़े कार्य को पूरा कर सकें, परमपिता परमात्मा हम सबको ऐसी शक्ति दें।

दिनांक २०–१२–६२ **–परम सिंह**

अध्याय 1

देव यज्ञ

आदि सृष्टि से लेकर अब तक कोई समय ऐसा नहीं मिलता जब किसी न किसी रूप में हवन-यज्ञ का प्रचार समस्त संसार में न रह चुका हो। हमारे वेद-शास्त्र, ब्राह्मण, उपनिषद, गीता, रामायण, महाभारत इत्यादि प्राचीन ग्रन्थ तो इसकी महिमा गाते थकते ही नहीं, पर आधुनिक विद्वान भी हमारे इस सिद्धान्त की पुष्टि करते हैं। प्रोफ़ेसर मेक्समूलर साहब की पुस्तक 'फिजिकल रिलीजन' के पाठ से विदित होता है कि यवन देश के तत्ववेत्ता 'प्ल्यूकी' ने आग को वायु-शोधक माना है। आग जलाने की रीति गत शताब्दी तक स्काटलैंड में पाई जाती थी। आयरलैंड और दक्षिणी अमेरिका में महामारी के लिए अग्नि जलाने की प्रथा प्रचलित रह चुकी है। जापान और चीन में होम को घोम कहते हैं और मन्दिरों में धूप जलाते हैं। जर्मनी में लेवेडर की बत्ती जलाई जाती है। ईरान के पारसी लोग हवन को हिन्दुओं की तरह उत्तमता से करते हैं।

काल की गति विचित्र है। समय आया कि ऐसे सार्वभौम सिद्धान्त को न केवल भुला दिया गया किन्तु विज्ञान के शिखर पर पहुँचने के अभिमानी पाश्चात्य जगत के भ्रमपूर्ण विज्ञानियों ने हवन यज्ञ को हानिकारक सिद्ध करना प्रारम्भ कर दिया और यह कहा कि आर्य लोग मूर्ख हैं जो अपना धन खर्च करके हवन करते हैं तथा उससे कार्बन्-डाय-आक्साइड (CO_2) उत्पन्न कर अपने तथा जातीय स्वास्थ्य को बिगाड़ते हैं। फिर क्या था ! हमारे देश के अर्ध शिक्षित बाबू लोगों ने भी यही राग अलापना प्रारम्भ कर दिया और हवन यज्ञ का उपहास किया जाने लगा। उधर प्राचीन संस्कृति के उपासक हवन यज्ञ करने वालों ने भी उसके वैज्ञानिक गुणों को भुलाकर केवल पूजा-पाठ की चीज समझ लिया। अत: विवाह आदि उत्सवों में हवन यज्ञ के स्थान में 'अग्न्यारी', मृतक संस्कार में एक तोला घी से 'कपाल-क्रिया' और बड़े यज्ञों में केवल जौ, तिल इत्यादि नाम मात्र की सामग्री का थोड़ा सा हवन प्रचलित रह गया।

ऐसे समय में वेद के पूर्ण ज्ञाता, सत्य के अप्रतिम उद्‌गाता, प्राचीन संस्कृति के अनन्य भक्त ऋषि दयानन्द जी महाराज की सिंह गर्जना हुई। उन्होंने हवन यज्ञ के वैज्ञानिक लाभ बताते हुये उसको स्वास्थ्यवर्धक, रोग-नाशक एवं वायु-शोधक बताया और प्रत्येक वैदिक धर्मी के लिए भोजन तथा अन्य आवश्यक कार्यों की भाँति नित्य हवन करने का विधान किया तथा ऐसा न करने वालों को 'पापी' बताया अर्थात् जिसका फल रोगी होकर दुःख भोगना है।

कुछ समय तक ऋषि के इस सिद्‌धान्त और पाश्चात्य विज्ञान की बड़ी मुठभेड़ रही। विदेशी सभ्यता में पले भारतीय ही उपर्युक्त भ्रमपूर्ण आधुनिक विज्ञान को वेद-वाक्य की भाँति प्रामाणिक मानकर आर्यों पर आक्षेप करते रहे और हवन को हानिकारक कहते रहे। आर्यों को अपने ऋषियों की दिव्य मेधावी बुद्‌धि पर विश्वास था। वे समझते थे कि इस पाश्चात्य विज्ञान के सिद्‌धान्त तो नित्य बदलते रहते हैं। आज जो विज्ञान उसको हानिकारक मान रहा है सम्भव है, कभी इसके लाभों को समझकर उपयोगी बताने लगे। हुआ भी ऐसा ही। हवन की उपयोगिता प्रत्यक्ष देखकर पाश्चात्य विज्ञान के सिद्‌धान्त बदले। आज का विज्ञान बताता है कि जो कृमि हमारे शरीर को रोग-ग्रस्त करने की शक्ति रखते हैं उन्हें धुआँ नष्ट कर देता है।

फ्रांस देश के प्रसिद्‌ध रसायन वेत्ता मिस्टर त्रिले ने विज्ञान द्‌वारा मालूम किया कि लकड़ी जलाने से 'फार्मिक आलडीहाइड' नामी एक गैस निकलती है जिसका गुण सब प्रकार के कृमियों (Germs) को मारना है। आजकल यह गैस जल मे मिलाकर बाज़ार में 'फार्मेलिन' के नाम से मेडिकल की दुकान पर बेची जाती है और मकानों के शुद्‌ध करने के काम में लाई जाती है, पर यह इस रूप में फिनाइल से भी अधिक बदबूदार होती है। तो, पाश्चात्य विज्ञान जिस चीज़ को कल हानिकारक समझता था, आज उसे रोग-निवारक मानने लगा और हवन के ऊपर किया हुआ वह आक्षेप जाता रहा। पर उसके अन्य गुण अभी गुप्त ही रहे। आगे चलकर मि० त्रिले ने ही परीक्षण के पश्चात् मालूम किया कि शकर (खाँड)

जलाने से भी फार्मिक आलडोहाइड गैस निकलती है जो रोग नाशक है। हमारे हवन यज्ञ में गन्ने की खाँड तो जलाई ही जाती है, पर अन्य वस्तुएँ घी, दूध, मुनक्का, छुहारा, चावल, किशमिश इत्यादि जो पदार्थ हवन में जलाए जाते हैं उनमें भी रसायन शास्त्र की खोज के अनुसार वही शकर होती है जो कृमि-नाशक है।

विज्ञान ने और उन्नति की और उपर्युक्त वस्तुओं को पृथक्-पृथक् जला कर विज्ञानवेत्ताओं ने परीक्षण किए और फ्रांस के विज्ञानवेत्ता प्रोफ़ेसर टिलबर्ट साहब ने बताया कि खाँड जलाने से हैज़ा, तपेदिक और चेचक इत्यादि का विष शीघ्र नष्ट हो जाता है।

डा० टाटलिट साहब ने बताया कि मुनक्का, किशमिश इत्यादि के जलाने से टाइफायड ज्वर के कीटाणु केवल आधे घण्टे में और दूसरे रोगों के कीटाणु घण्टे दो घण्टे में समाप्त हो जाते हैं। फ्रांस के ही डाक्टर हेफ़किन ने परीक्षण के पश्चात् बताया कि घी जलाने से रोगकृमियों का नाश होता है।

देखा, ऋषि बुद्धि का चमत्कार ! जिस बात को हमारे पूर्वज ऋषि लाखों वर्ष पूर्व बता चुके थे और जिस बात को वैदिक विज्ञानी दयानन्द ने पाश्चात्य विज्ञान के विपरीत होने पर भी बल पूर्वक कहा था आज वही बात पाश्चात्य विज्ञान से भी सत्य सिद्ध हो रही है। आप भी विचार कीजिये:–

1. सब विद्वान जानते हैं कि स्थूल की अपेक्षा सूक्ष्म अधिक शक्तिशाली है तथा सूक्ष्म, स्थूल में प्रवेश कर सकता है; स्थूल, सूक्ष्म में नहीं। आटे में मिली शकर के सूक्ष्म परमाणु पृथक् करने में मनुष्य की स्थूल अँगुलियाँ असमर्थ हैं, पर चींटी का सूक्ष्म मुँह उसे सुगमता से पृथक् कर सकता है। सोने का एक छोटा टुकड़ा एक मनुष्य खा ले तो उस पर कोई प्रभाव न होगा, पर उसी टुकड़े को सूक्ष्म करके वरक बनाकर खावे तो कुछ शक्ति आवेगी और यदि बहुत सूक्ष्म करके अर्थात् भस्म बनाकर खावे तो पहले ही दिन से उसकी गर्मी अनुभव होगी और कुछ समय में चेहरे पर सुर्खी और शरीर में शक्ति का संचार हो जायेगा।

यज्ञ में जो औषधियाँ डाली जाती हैं उनके परमाणु यज्ञ अग्नि द्वारा सूक्ष्म होकर अपने स्थूल रूप की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली हो जाते हैं।

2. किसी वस्तु को सूक्ष्म करने का सबसे बड़ा साधन अग्नि है। परीक्षा के लिए एक लाल मिर्च लीजिए। स्थूल रूप में इसे एक व्यक्ति सुगमतापूर्वक खा सकता है, पर खरल में घोंट कर सूक्ष्म करने पर कई व्यक्ति उसके प्रभाव को न सह सकेंगे; और यदि उसे आग में जला दें तो दूर-दूर बैठे लोग भी खाँसने लगेंगे अर्थात् अग्नि द्वारा सूक्ष्म करने पर वस्तु की शक्ति सबसे अधिक बढ़ जाती है। अतः हवन यज्ञ में प्रयुक्त औषधियों के सूक्ष्म कणों द्वारा सूक्ष्म कीटाणु वाले रोग दूर हो सकते हैं।

3. परीक्षण करने के पश्चात् केमिकल प्रापरटीज की सम्मति इस विषय में निम्नलिखित प्रकार है :–

‘जायफल, जावित्री, बड़ी इलायची, सूखा चन्दन इत्यादि अग्नि में जलाने पर उनके उपयोगी भाग ज्यों के त्यों रहते हैं या सूक्ष्म हो जाते हैं। पहले पहल इनसे सुगंधित तेल गैस बन कर निकलते हैं। (हवन यज्ञ में ये चीजें अपने असली रूप में मिलती हैं। अग्नि इन चीजों को गैस बना देती है। लेखक) उड़ने वाले तेलों के परमाणु 1/10,000 से लेकर 1/10,00,00,000, सेंटीमीटर व्यास वाले तक देखे गए हैं।

यह सब कुछ अन्वेषण हो जाने पर भी एक आक्षेप किया जाता है कि आग जलाने से कार्बन डाइआक्साइड भी उत्पन्न होती है जो दम घोटने वाली होने के कारण शरीर के लिये हानिकारक है।

उत्तर यह है कि यह बात भी हमारे ऋषियों के ज्ञान में थी। तभी तो उन्होंने यज्ञ को इतना लाभप्रद मानकर भी ऐसी खुली आज्ञा नहीं दी कि चाहें किसी समय, कितनी ही ओर कैसी ही लकड़ी लेकर, कितने ही बड़े कुण्ड में, कितनी ही सामग्री जला दी जावे उससे सदैव लाभ ही होगा। उन विचारशील मनीषियों ने इन

सब बातों के वैज्ञानिक ढंग पर नियम बनाये ताकि हानिकारक परिमाण में यह गैस उत्पन्न न हो। यज्ञ-कुण्ड के चारों ओर एक नाली बनाई जाती है। उसमें पानी भरा जाता है जिससे यह गैस जितनी ऊपर पहुँच जाये वह तो वनस्पति वृद्धि का कार्य करे (जिसका वैज्ञानिक नियम आगे बतायेंगे) और जितनी नीचे हवन-कुण्ड के पास रह जावे उसे पानी चूस ले।

जो सज्जन ऋषियों की बताई विधि पर ध्यान न देकर मनमाने तरीके से इन वस्तुओं को आग में जलावें, सम्भव है, लाभ के साथ वे कुछ हानि भी उठावें। जैसा कि देखा भी गया है कि बाज़ारू सस्ती अशुद्ध सामग्री से नियम विरुद्ध हवन करने वाले रोगियों को खांसी इत्यादि बढ़ जाती है। पर विधि पूर्वक हवन यज्ञ से तो तपेदिक जैसे भयानक रोग दूर हो सकते हैं। (इस विषय की पूरी जानकारी प्राप्त करने के लिए लेखक की 'टी०बी० की अचूक चिकित्सा' पुस्तक पढ़ें ।) नित्य प्रति हवन करने वाले का सर्वदा स्वस्थ रहना और विशेषतया संक्रामक रोगों से बचे रहना तो साधारण सी बात है।

अब हम यह बताने के लिये कि कार्बन डाइआक्साइड ऊपर चढ़कर क्या काम करती है, प्रो० बालकृष्ण की सम्मति उन्हीं के शब्दों में लिखते हैं, 'पदार्थ विद्या से पता लगता है कि कतिपय पदार्थों में से प्रकाश गुजर सकता है पर धर्म नहीं गुज़र सकता। बहुत से बगीचों में गर्म घरों (Hot Houses) को पाठकों ने देखा होगा। उन में ऐसे पौधे लगाये जाते हैं जिन्हें अधिक उष्मा चाहिये। अब शीशा सूर्य की किरणों को अपने में से गुज़रने देता है, परन्तु अन्दर के धर्म को घर से बाहर नहीं गुज़रने देता। इसी कारण शीश-महलों में गर्मी अधिक रहती है। मालूम किया गया है कि कार्बन-डाइ-आक्साइड भी इस विषय में शीशा जैसा पदार्थ है। उसमें सूर्य की रश्मियां गुज़र आती हैं परन्तु भूमि से टकराकर बाहर नहीं जा सकतीं। वायु-मण्डल के 1000 परिमाण में 3 परिमाण कार्बन डाइ आक्साइड है।

'इसका फैलाव भूमि पर एक प्रकार का पर्दा बना देता है क्योंकि यह साधारण वायु से डेढ़ गुना भारी है। भूमि तथा इस पर्दे के मध्य धर्म कैद रहता है। ज्यों ज्यों वह पर्दा अधिक मोटा होगा त्यों त्यों थोड़ा धर्म निकल कर वायु मण्डल में बिखर जायेगा। आक्सीजन तथा नाइट्रोजन में उपर्युक्त प्रकार से धर्म को रोकने की शक्ति नहीं। इस कारण यदि कार्बन डाइ-आक्साइड वायु-मण्डल में कम हो जावे तो धर्म के बिखर जाने से इतनी सर्दी पड़ने लगेगी कि यह भूमि किसी जीव को धारण नहीं कर सकेगी। भूगर्भ विद्या की एक प्रसिद्ध पुस्तक में लिखा है कि धर्म ग्रहण करने का गुण धारण करने के कारण कार्बन डाइ आक्साइड वायु पर बड़ा प्रभाव डालती है। उसकी मात्रा में किंचित् मात्र भी भेद आने से बड़े-बड़े परिवर्तन हो जावेंगे। यदि आधुनिक मात्रा को केवल दुगुना कर दिया जाय अर्थात् 1000 परिमाण में 3 के स्थान पर 6 परिमाण कार्बन डाइ-आक्साइड वायु के कर दिये जावें तो भूमि की सब बर्फ पिघल कर ध्रुवों में मोतदिल आबो हवा हो जावे और यदि मात्रा आधी कर दी जावे तो सारी भूमि पर फिर से हिम ही हिम छा जावे।'

इसी प्रकार प्रसिद्ध रसायन शास्त्र कर्त्ता मोएडालीफ लिखता है:– वायु में कार्बन डाइ-आक्साइड की मात्रा पर भूमि का ताप आधारित रहता है। भिन्न भिन्न कालों में ताप की भिन्नता का प्रधान कारण कार्बन वायु की भिन्नता थी।'

पाठकों को अब पता लगा होगा कि यदि कहीं बनावटी तौर से कार्बन गैस उत्पन्न कर वायु मण्डल में छोड़ी जावे तो वहाँ की गर्मी बढ़ जावेगी। यह नियम है कि जहाँ गर्मी अधिक होगी यदि वहाँ जल हो तो वनस्पति को अत्यन्त बहुतायत होगी।

हवन से कार्बन गैस पैदा कर हम धर्म बढ़ाते हैं जिससे अन्न फल आदि की अधिक उत्पति होती है। इसके प्रत्यक्ष उदाहरण विद्यमान हैं। ज्वालामुखी पर्वतों से यह वायु निकलती है। उनके आस पास वृक्ष तथा वनस्पति अधिक होती

है। फ्रांस देश में यूवरीन में एक चश्मे से यह वायु निकलती है अतः वहां वृक्ष इत्यादि की बहुतायत है।

इसी प्रकार भूमि के इस रूप में आने से पूर्व जो कार्बनकाल था जिसमें कार्बन गैस अधिक थी, उस समय जैसी वनस्पति थी वैसी अब तक फिर कभी नहीं हुई। उपर्युक्त उदाहरणों से सिद्ध हुआ कि कार्बन गैस से वनस्पति अन्नादि बढ़ते हैं। जो बात आज साइंस द्वारा सत्य सिद्ध हो रही है उस को हमारे ऋषि बहुत पहले समझकर हवन का एक उद्देश्य अन्नों का बढ़ाना समझते थे।

तभी तो भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कहा है :–

अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्न सम्भवः।

यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्म समुद्भवः।।

अर्थ– सम्पूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं और अन्न की उत्पत्ति वृष्टि से होती है। वृष्टि यज्ञ से होती है और यज्ञ कर्म से उत्पन्न होने वाला है।

अध्याय 2

संक्रामक रोग तथा देव यज्ञ

रोगों में संक्रामक रोग बहुत भयानक होते हैं। तपेदिक, हैज़ा, प्लेग, चेचक, मोतीझरा इत्यादि सब संक्रामक अर्थात् छूत के रोग हैं। यह छूत क्या है, कैसे लगती है, आधुनिक नवीन विज्ञान इससे बचने के क्या उपाय बताता है और हवन यज्ञ द्वारा इन रोगों से कैसे रक्षा होती है, ये बातें संक्षेप में यहाँ बताई जावेंगी।

जब कोई रोग, किसी रोगी के सम्पर्क से दूसरे स्वस्थ मनुष्य को लग जावे, उसे हम छूत की बीमारी (Contagious Disease) कहते हैं। भारत, अफ़्रीका तथा अरब के कुछ प्रदेशों में सामान्य लोगों का ऐसा विचार है कि छूत की बीमारी के रोगी को कोई भूत-प्रेत चिपटा रहता है जो उड़कर स्वस्थ मनुष्य को लग जाता है, परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। छूत लगने का कारण छोटे कृमि होते हैं, जिनको डाक्टरी में 'बेक्टीरिया' कहते हैं। ये कृमि इतने छोटे होते हैं कि आंख से दिखाई नहीं देते। और दिखाई भी कैसे दे सकते हैं जब कि यदि इनको बराबर–बराबर रखा जाय तो सामान्यत: 15,000 कृमि एक इंच स्थान घेरेंगे और यदि इनको तौला जावे तो एक खसखस के दाने पर बीस अरब कीड़े चढ़ जावेंगे। (भिन्न-भिन्न रोग के कृमि विभिन्न आकृति और भार वाले होते हैं, इसीलिये पिछले वाक्य में 'सामान्यत:' शब्द का प्रयोग किया गया है।)

कृमि द्वारा रोग का होना भारतवर्ष के विद्वान बहुत समय से जानते थे। चेचक इत्यादि के रोगी के पास प्रत्येक व्यक्ति को न जाने देना इसका प्रत्यक्ष प्रमाण अब भी मिलता है। वेदों में अनेक स्थानों पर इन कृमियों का वर्णन किया गया है। प्रमाण के लिए केवल एक मंत्र नीचे दिया जाता है–

ओ३म् दृष्टमदृष्टमतृहमथो कुरुरुमतृदम्।
अलगण्डून्सर्वान् छुलुनान् क्रिमीन् वचसा जम्भयामसि।।

(अ. कां. २, सू. ३१, मंत्र २)

अथर्ववेद के द्वितीय काण्ड में जहाँ अग्नि और यज्ञ के स्वरूप आदि का का उल्लेख मिलता है, इस मंत्र का भी उल्लेख है जिसका अर्थ है :

जो दिखाई देते हैं और जो दिखाई नहीं देते (सूक्ष्म या अदृश्य) ऐसे हानिकारक, रोगकारक कृमि या परजीवी जीवों को वाणी, मंत्र या संकल्प के द्वारा मैंने नष्ट कर दिया है।

योरुप में भी बहुत समय से यह धारणा विद्यमान थी किन्तु उस समय कृमियों की विद्यमानता को अनुमान से ही सिद्ध करते थे, प्रत्यक्ष नहीं देख सकते थे। Dr. Lenwan Locks के अन्वेषण के पश्चात् अब लगभग दो शताब्दी से इस विद्या में विशेष उन्नति हुई है और पिछली शताब्दी में तो किन्हीं-किन्हीं अन्वेषणकर्त्ताओं ने आश्चर्यजनक अन्वेषण करके और इस विषय पर बड़ी-बड़ी पुस्तकें लिखकर संसार को चकित कर दिया जिसका परिणाम यह हुआ कि अनेक भयंकर रोगों की चिकित्सा बड़ी सुगम हो गई, और अब कृमि का होना केवल अनुमान से ही नहीं सिद्ध किया जाता, किन्तु ऐसे यन्त्र आविष्कृत हो चुके हैं जिनके द्वारा इतने बारीक कृमि आँख से देखे जा सकते हैं।

ये कृमि प्रत्येक स्थान पर मिलते हैं। पृथ्वी का कोई स्थान कदाचित् इनसे रिक्त नहीं है। नित्य प्रति अनेक कृमि नाक और मुंह द्वारा हमारे शरीर में प्रविष्ट होते हैं और हमारी त्वचा पर भी चिमटे रहते हैं। यदि आप किसी ऐसे कमरे में बैठे हों, जिसमें किसी छिद्र में से सूर्य का प्रकाश आता हो, तो आपको इस प्रकाश में हजारों परमाणु उड़ते दृष्टिगोचर होंगे। इन्हीं परमाणुओं में लाखों-करोड़ों कृमि होते हैं। खुली वायु की अपेक्षा बंद वायु में, विशेषतया जहाँ अधिक मनुष्य रहते हों, और ऊपर की अपेक्षा नीचे की वायु में अधिक कृमि पाए जाते हैं। स्वच्छ वायु किन्हीं कृमियों की कट्टर शत्रु है। ये कृमि पतझड़ की ऋतु में सब से अधिक और सर्दी में सबसे कम होते हैं। शुद्ध निर्मल जल में न्यून और मैले जल में अधिकता से होते हैं। बहते जल में कम और बन्द जल में अधिक होते हैं। गंगा के निर्मल जल में इनका अभाव है।

जब कहीं गडढे आदि में मैला पानी सूख जाता है तो इससे कृमि भी सूखकर वायु में उड़ने लगते हैं और रोगों को फैलाते हैं। मिट्टी में भी ये कृमि रहते हैं। जहाँ मुर्दे गाड़े जाते हैं, वहाँ तो यह बहुत अधिकता से होते हैं और हज़ारों रोगों का कारण बनते हैं। इसीलिए तो वैदिक धर्म ने शव को गाड़ने के स्थान पर जलाने की आज्ञा दी है। बुद्धिमान व्यक्ति पाश्चात्य देशों में भी अब शव गाड़ने के स्थान में जलाने की प्रथा प्रचलित कर रहे हैं। (बनार्ड शा की 'विल' तो प्रबुद्ध पाठकों को याद होगी ही।)

दाल, रोटी, साग आदि का स्वाद बिगड़ जाना, दूध का खराब हो जाना–यह सब इन्हीं कृमियों के कारण होता है। रोटी पर जो फफूंदी आ जाती है उसमें असंख्य कृमि होते हैं। ताज़े संतरे का रस निकाल कर रख दो तो दो ही दिन में इन्हीं कृमियों के मिलने के कारण उसका स्वाद बदल जावेगा, पर यदि उसे बोतल में भर कर बोतल इस तरकीब से बंद कर दो कि उसमें वायु का प्रवेश न हो सके अर्थात् उसमें वे कृमि न पहुंच पावें तो वही दस महीनों पश्चात् भी वैसा ही ताज़ा निकलेगा। आधुनिक विज्ञान ने इस मर्म को समझकर फल के रसों की तिज़ारत करके लाखों रुपया कमाया है। पर रोग रक्षा विषय में ये उपाय कितने अपूर्ण हैं, यह अन्यत्र बतायेंगे।

कृमियों की सन्तानोत्पत्ति

कृमियों की सन्तानोत्पत्ति का ढंग बिल्कुल निराला है। एक कृमि थोड़ा सा लम्बा होकर दो भागों में विभक्त हो जाता है और फिर दोनों भाग पृथक्-पृथक् कृमि बन जाते हैं। आधे घंटे से कुछ कम समय में एक कृमि के दो हो जाते हैं। अनुमान किया गया है कि एक कृमि दस घंटों में बीस लाख की संख्या तक बढ़ सकता है, और विशूचिका का एक कृमि एक दिन में चार अरब अस्सी करोड़ की संख्या में हो जाता है। तब ही तो इस रोग के अधिक रोगी नहीं बचते।

आधुनिक विज्ञान इनसे रक्षा का क्या उपाय बताता है ?

इन कृमियों द्वारा जो रोग उत्पन्न होते हैं या जो छूत की बीमारियां होती हैं, उनसे बचने के उपाय आधुनिक विज्ञान ने बड़े अन्वेषण और गहरी खोज के पश्चात् निम्नलिखित बतलाएं हैं–

(1) घरमें कोई रोगी हो तो घरवाले उसके पास न जावें। उसके पात्र, वस्त्र, मकान आदि सब पृथक् हों और घर के स्वस्थ व्यक्ति उस रोग से बचने को टीका लगवा लें।

(2) यदि नगर में कोई संक्रामक रोग फैला हो तो अन्य बहुत से प्रतिबन्धों के साथ ही समस्त नगर के लोग टीका लगवा लें। यदि देश भर में फैला हो तो सारा देश टीका लगवावे और कई रोग साथ-साथ फैले हों तो सबका पृथक्-पृथक् टीका लगवावें।

विचारणीय यह है कि भारत जैसे निर्धन और धर्मपरायण देश में क्या यह संभव है कि पुत्र रोग शैया पर पड़ा हो और माता-पिता उसके समीप न जावें, पति रोगी हो और पत्नी पृथक् बैठी रहे, उसकी कोई वस्तु न छुए ? रोगी का कार्य करने को हर समय नर्सें बुलाई जावें या अपने घर के किसी व्यक्ति के रोगी होते ही उसे शफाखाने में डालकर सब घर चलें आवें ?

टीका लगवाना भी सरल काम नहीं। प्रथम तो जब यह ज्ञात होता है कि टीके के कार्य में अनेक जीवित पशुओं का रक्त, उन्हें विभिन्न प्रकार की यातनाएं देकर मशीन द्वारा निकालकर काम में आता है, तो धार्मिक संस्कारों से संस्कृत भारतीयों को तो उससे वैसे ही घृणा हो जाती है। फिर आजकल तपेदिक, प्लेग, हैज़ा, मोतीझरा इत्यादि अनेक रोग नगरों में नित्य फैले ही रहते हैं। किस-किस का टीका कौन-कौन ले ? जब कि उनका प्रभाव भी अस्थायी होता है और उनमें

से अनेक टीके पुरुषत्व शक्ति एवं जीवनी शक्ति को भी हानि पहुँचाते हैं ? तो प्रश्न यह उठता है कि–

फिर क्या करें ?

सबसे उत्तम उपाय यह है कि प्रत्येक घर में नित्य प्रति हवन किया जावे जिससे वायु शुद्ध और हल्की होकर स्वयं कृमियों का नाश कर दे। उस वायु के घर में फैलने से जहां खान पान की वस्तुएँ कृमि रहित होवेंगी, शीघ्र सड़ने से बचेंगी वहां स्वस्थ पुरुष रोग की छूत से सुरक्षित रह सकेंगे। वे ही परमाणु वायु में सम्मिलित होकर श्वास द्वारा जब रोगी के शरीर में प्रवेश करेंगे तो वहां से कृमियों का नाश करेंगे। शतपथ ब्राह्मण (1,1,4,14,-18) में लिखा है–

'किरात और आकुली, अतिसार और विशेष सूजन के रोग आर्यों को दुःख देते रहते थे। इनके नाश करने के लिये ऋषभ नामी औषधि से सफलता न हुई। आर्यों को इस कारण क्लेश था। बहुत अन्वेषण के पश्चात् उन रोगों का यज्ञ द्वारा नाश करने का उपाय सूझा और वे (आर्य) सफल हुए।'

इस प्रसंग में दो रोग असुर कहे गए हैं और एक स्थान पर कहा गया है कि 'असुर तथा राक्षस (अर्थात् कृमि) यज्ञ से भयभीत होते थे, क्योंकि वह उन (कृमियों) को मारनेवाला होता था।'

अत: हवन से बढ़ कर और कोई उपाय इस छूत से बचने का नहीं हो सकता। इसीलिए वैदिक धर्म में प्रात: सायं हवन करना धार्मिक कृत्य बतलाया है ताकि हर एक मकान की वायु शुद्ध होकर रोगों का नाश कर दे। इतिहास भी इसकी पुष्टि करता है। जिस समय हवन की यह प्रथा थी, रोगों की ऐसी भरमार न थी। लोकसभा विधानसभा, म्युनिसिपल बोर्ड आदि के सदस्य एवं अधिकारी यदि इस ओर ध्यान दें और करोड़ों रुपया टीका इत्यादि की औषधियों पर व्यय करने के स्थान पर नगरों में नित्यप्रति विधिपूर्वक हवन कराने का प्रयत्न करें तो रोगों का बढ़ता हुआ वेग आज रुक सकता है। देश का रुपया देश में ही रहेगा, विदेशियों

को मौज मारने का अवसर न मिलेगा। फिर वे हमारे गुरु नहीं होंगे, इस विद्या और विषय में हम उनके गुरु होंगे।

हमारे हिन्दूभाई तो परम्परा से यज्ञ की महिमा देखते आए हैं। हिन्दुओं में अब भी प्रथा है कि चेचक, हैज़ा इत्यादि फैले तो देवी जी के नाम से हवन कराया जाता है। यद्यपि इस समय विधिपूर्वक और यथेष्ट परिमाण में हवन न होने से यथेष्ट लाभ भी प्राप्त नहीं होता, फिर भी इससे यज्ञ की प्राचीनता तो सिद्ध होती ही है। और जहां कहीं विधि अनुकूल हवन कराए गए, वहां इस प्रकार के रोग नष्ट हो गए, क्योंकि हवन से वायुमण्डल में फैले कृमियों का नाश होता है।

—०—

द्रष्टव्य:– स्वर्गीय डाक्टर साहब ने, बाद में अवसर मिलने पर, सरकारी सेनेटोरियम में यज्ञ चिकित्सा के परीक्षण किए थे, जो क्षयरोगियों पर 80 प्रतिशत तथा मलेरिया ज्वर, मियादी ज्वर तथा अन्य प्रकार के ज्वर, प्लेग, हैज़ा, चेचक आदि पर शत प्रतिशत सफल हुए।

——०——

अध्याय 3

रोग से रक्षा तथा देवयज्ञ

पदार्थ विद्या से यह बात सिद्ध हो चुकी है कि जितने प्राकृतिक पदार्थ हैं, उनका सूक्ष्म से सूक्ष्म परमाणु हर समय गतिशील रहता है, यद्यपि प्रत्यक्ष में ऐसा दृष्टिगोचर नहीं होता। दीवार, छत, मेज़, कुर्सी, लेखिनी, मसिपात्र आदि यद्यपि आपको गतिशून्य दिखाई देती हैं पर इनका प्रत्येक परमाणु गतिमान है। और यह गति भी ऊट-पटांग नहीं, नियम-बद्ध होती है। प्रत्येक परमाणु एक सी गति नहीं रखता, किन्तु किन्हीं परमाणुओं की गति समान होती है और किन्हीं की एक दूसरे के प्रतिकूल। प्रकृति का यह नियम है कि दो समान वस्तुएं परस्पर एक दूसरे को अपनी ओर खींचती हैं और विरुद्ध वस्तुएं एक दूसरे को हटाती हैं अतः जिन वस्तुओं के परमाणु एक सी गति करते हैं उनमें परस्पर आकर्षण होता है और विरुद्ध गतिवालों में अपकर्षण। आपने प्राय: देखा होगा कि एक कक्षा में कई विद्यार्थी पढ़ते हैं। उनमें से दो में विशेष मित्रता हो जाती है जब कि दूसरों में वैसी नहीं हो पाती। एक सभा में एक ही उद्देश्य की पूर्ति के लिए कई मनुष्य सभासद बनते हैं। उनमें से दो की घनिष्ठ मैत्री हो जाती है और शेष में वैसी नहीं होती, यद्यपि संबंध एक सा ही रहता है। एक पति-पत्नी परस्पर एक दूसरे पर प्राण निछावर करने को उद्यत रहते हैं जब कि दूसरे इसी सम्बन्ध वाले एक दूसरे से बात करने में भी घृणा करते हैं। यह सब कुछ भी इसी नियम के आधार पर होता है जिसे धार्मिक व्यक्ति पिछले संस्कार भी कहा करते हैं। इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं जिनमें जन्म से अपरिचित पिता-पुत्र एक दूसरे से मिले, तो दोनों में बिना जाने ही प्रेम उमड़ने लगा। इन सब बातों में नियम यही है कि एक सी गति रखने वाले परमाणु वाले शरीरों में परस्पर मैत्री एवं आकर्षण होता है और विरुद्ध वालों में अपकर्षण एवं घृणा।

यही हाल मनुष्य–शरीर का रोग विषय में भी है। भिन्न-भिन्न मनुष्यों के शरीर के परमाणु भिन्न-भिन्न रीति से गति करते हैं। जिन वस्तुओं के परमाणु जिस मनुष्य के शरीर के परमाणुओं के समान गति करते हैं, उन वस्तुओं को वह शरीर अपनी ओर खींचता है और जो विपरीत होते हैं उनको दूर हटाता है। अतः वायु मंडल में रोग-कृमि विद्यमान होने पर भी केवल उस मनुष्य पर रोग-कृमि आक्रमण कर सकते हैं, जिसके शरीर के परमाणुओं की गति उन कृमियों के परमाणुओं के समानवाली होती है। या दूसरे शब्दों में, जिस मनुष्य के भीतर रोगग्राहिणी शक्ति विद्यमान होती है। आपने देखा होगा कि तपेदिक, हैज़ा आदि के रोगी के पास चार मनुष्य असावधानी से रहते हैं। उनमें से एक पर रोग का आक्रमण हो जाता है और तीन पर कुछ बुरा प्रभाव नहीं होता। इसका कारण स्पष्ट है कि जिस पर रोग का आक्रमण हुआ, उसके भीतर रोग-ग्राहिणी शक्ति विद्यमान थी या उसके शरीर के परमाणुओं की गति रोग के कृमियों की गति के समान थी, जब कि शेष तीन मनुष्यों की उनके विपरीत। अतः नियम यह निर्धारित हुआ, 'वायु मंडल में रोग के कृमि विद्यमान होते हुये भी केवल उस मनुष्य पर अपने आक्रमण में सफल होंगे जिसके भीतर रोग को ग्रहण करने की शक्ति विद्यमान है।'

इस शक्ति के उत्पन्न होने के तीन बड़े कारण हैं –

(1) **पैतृक** — जैसे किसी मनुष्य के माता-पिता को क्षय-रोग, दमा, आतशक आदि का रोग हो, तो यह अनिवार्य तो नहीं कि अवश्य ही वह मनुष्य इन रोगों का ग्रास बने, पर ज़रा सी भी भूल से वह इन रोगों का रोगी हो सकता है, जबकि वही भूल किसी अन्य मनुष्य पर वैसा प्रभाव न कर सकेगी अर्थात् इन रोगों के कृमि इस मनुष्य पर अपने आक्रमण में बड़ी सुगमता से सफल होंगे।

(2) **विचार** — हर समय यह विचारते रहना कि कहीं मुझे क्षय रोग तो नहीं हो गया। इस प्रतिदिन के विचार से मानसिक शक्ति निर्बल होकर धीरे-धीरे

रोग को निमन्त्रण देने योग्य हो जाएगी अर्थात यह विचार करते - करते उस शरीर के परमाणुओं की गति उसी रोग के परमाणुओं की सी होने लगेगी और रोग-कृमि मिलते ही वह उन्हें आकर्षित कर लेगा।

(3) **सृष्टि क्रम के प्रतिकूल** — अनियमितता से रहकर अपने आपको निर्बल बना लेना। जैसे, अधिक रात्रि जागरण, सूर्योदय पश्चात् उठना, अधिक विषय भोग में फंसे रहना, बहुत चिन्ताग्रस्त रहना, शक्ति से अधिक पौष्टिक भोजन करना, बहुत उपवास करना, गन्दी हवा में रहना, तम्बाकू, मदिरा आदि का सेवन, मांस, मछ्ली आदि अप्राकृतिक वस्तुओं का सेवन करना आदि-आदि। ये कारण प्रत्येक मनुष्य के बहुत कुछ अपने हाथ में हैं। चाहें तो वह प्राकृतिक नियमों का पालन करके स्वास्थ्य का सुख उठाए और चाहें उनकी अवहेलना कर इन्द्रियों का दास बन कर डाक्टरों का बिल चुकाए।

स्वस्थ मनुष्य कौन है ?

जिस प्रकार हमारे शरीर के ऊपर खाल का खोल चढ़ा है उसी प्रकार शरीर के भीतर की ओर मुलायम खाल का अस्तर लगा है जो गले से लेकर आंतों के निचले भाग तक विशेष रूप से तर रहता है। जिस मनुष्य की यह खाल व अस्तर दोनों बिल्कुल ठीक हैं और उन पर कोई खराश नहीं है, वह स्वस्थ मनुष्य है और उस पर रोग के कृमि कोई बुरा प्रभाव नहीं कर सकते। इस वैज्ञानिक नियम को समझने वाले बुद्धिमान् चिकित्सक सर्वदा तेज़ जुलाब का निषेध करते हैं क्योंकि जुलाब की तेज़ औषधियां चाहें वह कैलोमेल या मेग्नेशिया साल्ट हों और चाहें वह शीर खिस्त या जमालघोटे की बनी गोलियां हों, आंत के अस्तर में से पानी चूम-चूस कर कोलन (मलाशय) में पहुंचाती हैं, जिससे न केवल आंतें निर्बल हो जाती हैं, अपितु उनमें खराश होकर कृमि को प्रवेश करने का अवसर मिल जाता है। अतः बुद्धिमान् मनुष्य वह है जो अपनी पाचनशक्ति का पूर्व से विचार रखकर ऐसा अवसर ही न आने दे कि जुलाब की आवश्यकता पड़े। खान-पान, रहन-सहन

प्राकृतिक रखने पर ऐसा होना बिलकुल भी असम्भव नहीं है। फिर भी यदि अभाग्यवश कभी अवसर आ ही पड़े तो भी प्राकृतिक उपायों से ही कोष्ठबद्धता दूर करने का यत्न करें। तेज जुलाब बिना अत्यन्त आवश्यकता के कभी न लें, चाहे दो-चार दिन वह कष्ट भोगना ही पड़े। अस्तु। यह तो बीच की बात थी। रोगकृमियों से बचने का पहला साधन तो यह हुआ कि हम स्वस्थ रहते हुए रोगग्राह्य-शक्ति अपने भीतर उत्पन्न ही न होने दें।

अब हम कृमिनाशक एक दूसरी शक्ति का वर्णन करते हैं जो हमें रोग से बचा सकती है। वह है–

रोग-संहारक-शक्ति (Immunity)

जब किसी रोग का कीटाणु मनुष्य-शरीर में श्वास या भोजन द्वारा प्रवेश करता है तो उसकी सूचना तुरन्त शरीर की अध्यक्ष प्राणसत्ता (**Vital force**) को होती है और रक्त में एक प्रकार की हलचल सी मच जाती है जो उस समय तो हमें अनुभव नहीं होती, पर हमारी प्राणसत्ता तुरन्त अपनी सहायक सेना रक्त कोषों को आज्ञा देती है कि इन शत्रुओं को मारकर भगा दो या खा जाओ। अतएव रक्त के श्वेत कण इन कृमियों को पकड़ कर अपनी ओर खींच कर दबा लेते हैं और अपने में से एक प्रकार का उफान खाया हुआ रस छोड़ते हैं जिससे कृमियों को अपने में हज़म कर जाते हैं। दूसरी ओर कृमि उसी शीघ्रता के साथ, जैसा कि पहले बताया जा चुका है, अपनी सन्तति को बढ़ाते हुए इन पर आक्रमण करते हैं। जिस मनुष्य का वीर्य आदि अधिक व्यय नहीं हुआ है उसके रक्त में इन संग्रामकर्त्ता सिपाहियों की संख्या बहुत अधिक होती है। अब यदि ये सैनिक लड़ाई में जीत जाते हैं तो रोग-कृमियों का नाश हो जाता है और हमें ज्ञात भी नहीं होता कि हमारे ऊपर किसी रोग का आक्रमण भी हुआ था; किन्तु जब कृमि इस संख्या में आक्रमण करते हैं कि निर्बल शरीर के रक्तकोष उनको पराजित नहीं कर सकते, तो कृमियों का शरीर पर अधिकार हो जाता है जो रोग रूप में प्रकट होता है।

पाठकों में से बहुतों ने किसी बढ़िया बायोस्कोप की फिल्मों में इस स्थान का दृश्य देखा होगा जो न केवल रोचक ही वरन् स्वास्थ्य विषयक ज्ञान को बढ़ाने वाला भी है। यदि ग्राम निवासी तथा नगर-निवासी भी जो चन्दा करके नाच, स्वांग, नौटंकी आदि कराया करते हैं, उस प्रकार के तमाशे कराया करें तो उनके मैले-कुचैले रहने के स्वभाव में और तम्बाकू, मदिरा आदि पीने की लत में शीघ्र परिवर्तन संभव है।

अस्तु ! शरीर की उक्त शक्ति को डाक्टरी में (**Immunity**) कहते हैं जिसे हम रोग-संहारक शक्ति कह सकते हैं। यह शक्ति हमारे शरीर में कुछ तो जन्म से ही साथ आती है और कुछ शरीर-वर्धन के साथ-साथ बढ़ती है। हां, यदि बाल्यावस्था में ही हम निर्बल हो जावें, हमारा भोजन अशुद्ध, विकृत, असंतुलित हो, या हमें पर्याप्त मात्रा में धूप, शुद्ध वायु एवं प्रकाश न मिले और सील के स्थान में रहना पड़े तो हमारे शरीर में यह शक्ति बढ़ती नहीं और हम रोगी हो जाते हैं।

अब आपको ज्ञात हो गया होगा कि इसी रोग संहारक शक्ति के कारण नित्य प्रति रोग-उत्पादक असंख्य कृमि हमारे शरीर में प्रवेश करने पर भी हमें रोगी नहीं बना सकते।

उल्लिखित बातों को ध्यान में रखते हुए विचार कीजिए कि हवन यज्ञ द्वारा रोग से रक्षा कैसे होती है–

(1) पदार्थ विद्या से यह बात सिद्ध हो चुकी है कि किसी वस्तु का नितांत अभाव नहीं होता (अर्थात कोई पदार्थ नष्ट नहीं होता), केवल उसका आकार परिवर्तित हो जाता है। अतः यज्ञ-अग्नि में डाले हुये पदार्थ नष्ट नहीं होते, उनका आकार बदल जाता है। यह अन्यत्र बता चुके हैं कि अग्नि में पड़कर वस्तुएं शुद्ध और शक्तिशाली हो जाती हैं। यज्ञ-अग्नि द्वारा औषधियों के परमाणु सूक्ष्म कर दिए जाते हैं जो अणु शक्ति के सिद्धान्त के आधार पर अपने पूर्व रूप की अपेक्षा असंख्य-गुणा अधिक शक्तिशाली हो जाते हैं।

अतः जो पदार्थ हवन में डाले गए उनके सूक्ष्म परमाणु हमारे शरीर में श्वास द्वारा पहुंच कर शरीर का भाग बन गए। अब ये परमाणु स्वास्थ्यप्रद परमाणुओं को तो अपनी ओर आकृष्ट करेंगे और रोग के कृमियों को दूर भगायेंगे जैसा कि वेद भगवान् ने बताया है:–

ओ३म् ज्याके परि णो नमश्मानं तन्वं कृधि।

वीडुर्वरीयोऽरातीरप द्वेषांस्या कृधि।। अथर्व १।२।२

(इस सूक्त का देवता इन्द्र है।)

अर्थ– हे (इन्द्र) यज्ञ ! (ज्याके) जय के लिए (नः) हमको (परि) सर्वथा (नम) तू झुका। (तन्वं) हमारे शरीर को (अश्मानम्) पत्थर सा सुदृढ़ (कृधि) बना दे। (वीडुः) तू दृढ़ होकर (अरातीः) विरोधी (द्वेषांसि) दोषों को (अप) हटाकर (वरीयः) बहुत दूर (आ कृधि) कर दे।

इसका तात्पर्य यही है कि यज्ञ से शरीर पुष्ट होता है और दोष (रोग कृमि) दूर भागते हैं।

(2) रक्त के श्वेत कण रोग कीटाणु को अपने में फंसाते हैं और घी, काफ़ूर, गूगल आदि का गुण कृमि नाश करने का है। अतः जब इन औषधियों के सूक्ष्म परमाणु कोषों में विद्यमान हो जावेंगे तो जहां शकर के परमाणुओं से उनको रोग कृमि पकड़ने में सुविधा होगी वहां इन औषधियों के कृमिनाशक गुण से रोग कृमि अधिक संख्या में शीघ्र नष्ट हो जावेंगे।

(3) रक्त के कोष अपने उफान वाले रस से कीटाणुओं को हज़म करते हैं। प्रकृति का नियम है कि गर्मी से उफान शीघ्र उत्पन्न होता है। शरद् ऋतु में जिस गुंधे आटे में २४ घंटे में उफान पैदा होगा; ग्रीष्म ऋतु में ६ घंटे में ही उत्पन्न हो जायगा। हवन की गर्मी वायु के साथ जब इन कोषों तक पहुँचेगी तो इनमें उफान उत्पन्न होने की शक्ति अपेक्षाकृत अधिक होगी जिससे वह रोग कीटाणुओं को शीघ्र और सुगमता से समाप्त कर सकेंगे।

(4) सीलन के स्थान पर बालक में Immunity (रोग संहारक शक्ति) कम पैदा होती है जब कि प्रकाश, वायु, धूप और गर्मी में अधिक होती है, यह बताया जा चुका है। अब यह प्रत्यक्ष ही है कि हवन से सीलन दूर होगी और प्रकाश तथा गर्मी उत्पन्न होगी। अतः इसके प्रभाव से शरीर में रोग संहारक शक्ति अधिक उत्पन्न होगी जिससे शरीर रोग के आक्रमणों का अधिक बलपूर्वक मुक़ाबला कर सकेगा।

(5) यकृत एवं प्लीहा के कोषों में रोग कीटाणु मारने की अधिक शक्ति है, ऐसा डाक्टरों का मत है। जिसके यकृत (जिगर) और प्लीहा (तिल्ली) स्वस्थ हैं वह सरलता - पूर्वक रोग से मुक्त रह सकेगा। यह साधारण मनुष्य भी जानते हैं कि सीलन वाले स्थान में जहां मलेरिया अधिक होता है, यकृत व प्लीहा पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है जब कि ओषजन युक्त वायु में वे अच्छे रहते हैं। हवन यज्ञ से चूंकि सीलन दूर होगी और आक्सीजन युक्त वायु अधिक बनेगी, अत: यकृत और प्लीहा भी स्वस्थ रहकर रोग से हमारी रक्षा कर सकेंगे।

——o——

अध्याय 4

देवयज्ञ और कठिन रोग

यज्ञ द्वारा विधि अनुकूल चिकित्सा करने से तपेदिक, संग्रहणी और मधुमेह (**Diabetes**) इत्यादि कठिन रोग नष्ट होते हैं।

कठिन रोग होने के मुख्यत: तीन कारण हैं :–

1. रक्त का अशुद्ध हो जाना।
2. किसी रोग के कीटाणुओं का हमारे शरीर में घुसना।
3. किसी भी कारण से शरीर के किसी आन्तरिक अंग का सुचारु रूप से कार्य न करना।

इन रोगों से बचने के लिये आजकल लोग रक्त शोधक औषधियां पीते हैं, फ़स्द खुलवाते हैं, टीका (**Injection**) लगवाते हैं और इन सब कामों के लिये गृहस्थ रोज़ डाक्टरों की खोज में परेशान घूमते हैं। पर वैदिक धर्म वह उपाय बताता है कि न कड़वी दवा पीनी पड़े, न फ़स्द खुलवाना पड़े, न सुई सुकवाना पड़े और न रोग का कष्ट उठाना पड़े। अर्थात् 'नित्य प्रति हवन किया करो।'

हवन सामग्री में गिलोय, चिरायता, शहद इत्यादि रक्त शोधक औषधियों के परमाणु श्वास और रोम छिद्रों द्वारा सीधे रक्त में पहुंच कर नित्य प्रति उसकी शुद्धि करते रहेंगे तथा गूगल इत्यादि कृमि नाशक पदार्थ प्रत्येक रोग के कृमि नाश करते रहेंगे और घी मेवा आदि पौष्टिक पदार्थ शरीर को बलवान बनाते रहेंगे। जब नित्य प्रति रोग की जड़ पर कुल्हाड़ा चल रहा है फिर रोग कहां से आ सकता है ! कठिन रोगों के सम्बन्ध में विस्तार से 'आयुर्वेदिक प्राकृतिक चिकित्सा' 'आहार चिकित्सा' तथा अन्य पुस्तकों में देखें।

——o——

अध्याय 5

हवन सामग्री तैयार करने के नियम एवं अन्य आवश्यक बातें

(1) सामग्री का सामान पृथक्-पृथक् बाँधने को कह दें।

(2) कोई औषधि घुनी, सड़ी, बहुत पुरानी न हो।

(3) हरी औषधियां – जैसे बिसौटा, मकोय, गिलोय आदि हरी मिल सकें तो वे हरी ही खरीदें। उन्हें काटकर और कुचल कर धूप में एक दो दिन सुखा लें। तब सामग्री में मिलायें।

(4) सब चीजें बारीक - बारीक कूटकर मिला लें।

(5) केसर, काफ़ूर, जावित्री, शकर और घी पृथक् रखें और इस प्रकार काम में लायें –

(क) काफ़ूर से नित्य प्रति अग्नि प्रदीप्त करें।

(ख) केसर और जावित्री घी में डाल लिया करें।

(ग) जहां नुस्खे में उल्लेख है वहां काफ़ूर, शकर, गुड़, शहद आदि नित्य के भाग के अनुसार सामग्री में मिला लिया करें।

(घ) घी नित्य ही सामग्री में इतना मिला लिया करें कि सामग्री सूखी न रहे। उसके लड्डू बंध सकें।

(6) घी गऊ का सर्वोत्तम होता है। रोग अवस्था में तो आवश्यक ही है। दैनिक यज्ञ में (आज की दूषित व्यवस्था के कारण) यदि गोघृत उपलब्ध न हो सके तो भैंस का घी प्रयोग में लायें, पर मिलावटी और अशुद्ध घी काम में न लायें। वनस्पति आयल को 'घी' न समझें।

(7) खीर, हलुआ, लड्डू आदि बनाए जायें तो उसमें से कुछ भाग हवन में भी डालें।

(8) समिधाएं आम, ढाक (पलाश), पीपल, देवदारु की प्रयोग में लाना चाहिए।

(9) सामग्री के भाग–सामग्री में कुल जितनी भाग वस्तुएं आपको मिलानी हैं उनकी संख्या नोट कर लीजिए। वज़न में कुल जितनी सामग्री तैयार करना चाहते हैं उसे इस संख्या से भाग दे दीजिए। भजनफल सामग्री का एक भाग होगा।

मान लीजिये सामग्री में आपको 20 भाग औषधियां मिलानी हैं और 8 किलो सामग्री तैयार करना है। तो किलो को ग्राम में परिवर्तित करने पर, 8000/20 = 400 ग्राम। यह एक भाग हुआ। जो वस्तु दो भाग मिलाना है वह 400 X 2 = 800 ग्राम हुई। इसी प्रकार हर वस्तु के भाग निकाल लें।

(10) सामग्री के नुसखे में ब्राह्मी का जहां भी उल्लेख हुआ है उससे अभिप्राय ब्राह्मी बूटी से है।

(11) यज्ञ करते समय दरवाजे, खिड़की, रोशनदान आदि बंद करने की आवश्यकता नहीं है। जिस कमरे में यज्ञ कर रहे हैं उसमें यदि वायु के आर-पार आने-जाने की सुविधा (**Cross Ventilation**) है तो वायु के झोंकों से बचने के लिये और वायु के साथ यज्ञ गैस को कमरे में बिना फैले ही बाहर जाने से रोकने के लिए एक ओर के दरवाज़े, खिड़की, आदि बन्द कर सकते हैं पर बाहर से वायु के आने का पूरा प्रबन्ध रहे।

(12) सामग्री की आहुति सदैव प्रज्जवलित अग्नि में डालें जिससे धुआँ न होने पावे।

(13) 'हवन के धुएं से रोगकृमि नष्ट होते हैं'–इसका अभिप्राय यह है कि हवन में जो औषधियां डाली जाती हैं, यज्ञ अग्नि द्वारा उनके परमाणु सूक्ष्म हो

जाते हैं और हवन से निकलने वाली 'गैस' में ये परमाणु मिले रहते हैं जो रोग कृमियों का नाश करते हैं। हवन के धुएं से अर्थ यहां 'हवन-गैस' से है। सामान्य अर्थ में प्रचलित 'धुएं' से नहीं।

(14) रोग-अवस्था में एक समय में कम से कम ३०० ग्राम सामग्री और इतना ही गौ का घृत होना चाहिए।

(15) 75 ग्राम सामग्री और इतने ही घी से तो हर स्वस्थ मनुष्य को अपने स्वास्थ्य को स्थिर रखने के अभिप्राय से नित्य प्रति हवन करना ही चाहिए।

——o——

अध्याय 6

एक बड़ी भूल और उसका उपाय

ऋतु-अनुकूल हवन सामग्री

ऋषि दयानन्द की कृपा से अब फिर से हवन यज्ञ का प्रचार होने लगा है और जहां अनेक सज्जन नित्य प्रति हवन करते हैं वहां कभी-कभी हज़ारों रुपया लगाकर बड़े बड़े यज्ञ भी किये जाते हैं; परन्तु हमें यह देख कर बड़ा दुःख होता है कि प्राय: इन यज्ञों में ऋतु और समय का कोई भी विचार न करके बोरियों के गर्दे की बाज़ारू सस्ती सामग्री बिना पर्याप्त मात्रा घी की मिलाये सूखी ही हवन में झोंकी जाती है। वास्तव में यज्ञ एक वैज्ञानिक कृत्य है। इसका समस्त कार्य उसी की सम्मति से होना चाहिए जो इस विज्ञान को जानता है। समय पर ऐसा विद्वान् प्राप्त न हो तो कम से कम ऋतु का विचार करके ताज़ी औषधियां (जो घुनी न हों) खरीद कर सामग्री बनायें अग्नि, काफ़ूर से ही प्रदीप्त करना चाहिए क्योंकि काफ़ूर के धुयें में नज़ला नाशक गुण है। नीचे ऋतु अनुकूल सामग्री के नुसखे दिये जाते हैं:–

1. वसन्त ऋतु

[क] (1) गूगल (2) देसी शकर – प्रत्येक 10 भाग।

[ख] (3) धूप का बुरादा (4) देवदारु (5) गिलोय (6) मुनक्का (7) गूलर की छाल (8) सुगंधकोकिला (9) हाओबेर – प्रत्येक 2.5 भाग।

[ग] (10) चिरायता (11) चन्दन सफ़ेद (12) चन्दन लाल (13) जायफल (14) कमलगट्टा (15) कपूर कचरी (16) इन्द्रजौ (17) शीतलचीनी (18) तालीसपत्र (19) अगर (20) तगर (21) मजीठ–प्रत्येक १ भाग।

[घ] (22) जावित्री ¼ भाग। (२३) केसर 1/8 भाग।

2. ग्रीष्म ऋतु

[क] (1) गूगल (2) देसी शकर–प्रत्येक 10 भाग।

[ख] (3) गुलाब के फूल (4) चिरौंजी (5) शतावर (6) खस (7) गिलोय (8) सुपारी– प्रत्येक दो भाग।

[ग] (9) आँवला (10) जटामामी (11) नागरमोथा (12) बायबिडंग (13) छरीला (14) दालचीनी (15) लौंग (16) चंदन सफ़ेद (17) चंदन लाल (18) तगर (19) मजीठ (20) इलायचो बड़ी (21) धूप का बुरादा (22) तालीसपत्र (23) उन्नाव (24) पदमाख–प्रत्येक एक भाग।

[घ] (25) केसर 1/8 भाग।

3. वर्षा ऋतु

[क] (1) गूगल 10 भाग। (2) देशी शकर 8 भाग।

[ख] (3) देवदारु (4) राल (5) गोला (6) जायफल (7) जटामासी (बालछड़) (8) बच (9) सफ़ेद चन्दन (10) छुहारे (11) नीम के सूखे पत्ते (12) मकोय जड़ सहित (13) सुगंधकोकिला–प्रत्येक 2.5 भाग।

[ग] (14) काला अगर (15) इन्द्रजौ (16) धूप का बुरादा (17) तगर (18) तेजपत्र (19) बेल का गूदा (20) गिलोय (21) तुलसी (22) बायबिडंग (23) नागकेसर (24) चिरायता–प्रत्येक १ भाग।

[घ] (25) छोटी इलायचो 1/2 भाग। (26) केसर 1/8 भाग।

4. शरद् ऋतु

[क] (1) गूगल (2) चन्दन सफ़ेद (3) चिरोंजो (4) गूलर की छाल (5) पीली सरसों (6) कपूर कचरी (7) जायफल (8) चिरायता (9) जटामासी (10) सहदेवी–प्रत्येक 2.5 भाग।

[ख] (11) चंदन लाल (12) चंदन पीला (13) नागकेसर (14) गिलोय (15) दालचीनी (16) पित्त पापड़ा (17) मोचरस (18) अगर (19) इन्द्रजो (20) असगन्ध (21) शीतलचीनी (22) पत्रज (23) तालमखाना (24) धान की खील–प्रत्येक एक भाग।

[ग] (25) किशमिश 5 भाग। (26) देसी शकर 8 भाग।

[घ] (27) केसर ½ भाग।

5. शिशिर ऋतु

[क] (1) गूगल 5 भाग। (2) देसी शकर 8 भाग।

[ख] (3) अखरोट की गिरी (4) मुनक्का (5) काले तिल (6) चंदन लाल (7) चिरायता (8) छुहारा (9) जटामासी (10) तुम्बरू (11) राल–प्रत्येक 2.5 भाग।

[ग] (12) काफ़ूर (13) बायबिडंग (14) इलायचो बड़ी (15) मुलहठी (16) मोचरस (17) गिलोय (18) तज (19) तुलसी (20) चिरोंजी (21) काकड़ा सिङ्गी (22) शतावर (23) दारु हल्दी (24) पदमाख (25) सुपारी–प्रत्येक एक भाग।

[घ] (26) रेणुका (27) शंख पुष्पी (28) कौंच के बीज (29) भोजपत्र–प्रत्येक ½ भाग।

6. हेमन्त ऋतु

[क] (1) गूगल 10 भाग। (2) देशी शकर 8 भाग।

[ख] (3) कपूर कचरी (4) मुनक्का (5) अखरोट गिरी (6) काले तिल (7) गोला (8) सुगंधकोकिला (9) हाओबेर – प्रत्येक 2.5 भाग।

[ग] (10) मूसली काली (11) पित्तपापड़ा (12) कूट (13) गिलोय (14) दालचीनी (15) जावित्री (16) मुश्कवाला (17) तालीसपत्र (18) तेजपत्र (19) सफ़ेद चन्दन – प्रत्येक 1 भाग।

[घ] (20) रासना १/२ भाग। (21) केसर 1/8 भाग।

द्रष्टव्य:– जायफल, केसर और चन्दन के दाम आजकल इतने चढ़ गये हैं कि इन वस्तुओं को पूरी मात्रा में जुटाना सामान्य श्रेणी के व्यक्ति के लिये लगभग असंभव सा है। फिर भी हमने यथास्थान पूरी मात्रा का ही उल्लेख किया है। जो पूरी मात्रा न जुटा सकें वे अपनी सुविधानुसार परिवर्तन कर लें; पर हवन करने का पूरा लाभ पूरी मात्रा से ही मिलेगा।

अध्याय 7

विभिन्न रोगों की हवन सामग्री के नुस्ख़े

(1) मलेरिया नाशक हवन सामग्री

[क] (1) गूगल (2) गिलोय (3) तुलसी के पत्ते (4) अतीस (5) जायफल (6) चिरायते के फल – प्रत्येक ४ भाग।

[ख] (7) पांडरी (8) शालपर्णी (9) ब्राह्मी (10) मकोय (11) गुलाब के फूल (12) क्षीर काकोली (13) लौंग (14) मुलहटी (15) हाओबेर (16) काफ़ूर (17) सुगन्धकोकिला (18) ऊद (19) अस्पंद (20) सहोड़ा की छाल (21) अकरकरा –प्रत्येक एक भाग।

[ग] (23) देसी शकर 8 भाग।

(2) मधुमेह नाशक हवन सामग्री

[क] (1) गूगल–दो भाग।

[ख] (2) हर्र बड़ी (3) बहेड़ा गुठली सहित (4) आंवला (5) तिल (6) गिलोय (7) चन्दन सफ़ेद (8) बादाम (9) सुगन्धकोकिला (10) जामुन की गुठली (11) गुड़मार (12) बेल के पत्ते (13) गूलर की छाल (14) शहद–प्रत्येक एक भाग।

(3) उपदंश नाशक हवन सामग्री

[क] (1) गूगल (2) मुंडी (3) चिरायता (4) गुलाब के फूल (5) खस (6) कमलगट्टा (7) सिंघाड़ा (8) लाल चंदन (9) सफ़ेद चंदन (10) इन्द्रजौ (11) गोखरू (12) ब्राह्मी (13) गिलोय (14) मुनक्का (15) देवदारु (16) शहद –प्रत्येक एक भाग।

[ख] (17) त्रिफला (हर्र, बहेड़ा, आंवला) तीन भाग। समिधायें आधी नीम की; आधी आम, पलाश (ढाक), पीपल या देवदारु की।

(4) चर्मरोग (खुजली, एक्ज़िमा आदि) नाशक सामग्री

[क] (1) गूगल (2) सुगन्धकोकिला (3) हाओबेर–प्रत्येक दो भाग।

[ख] (4) ब्राह्मी (5) सत्यानाशी (कटाई, भड़कटैया) (6) नीम के सूखे पत्ते (7) गिलोय (8) चिरायता (9) गन्धक (10) काफ़ूर (11) शहद – प्रत्येक एक भाग।

(5) दमा नाशक सामग्री

(इसकी विशिष्ट सामग्री के नुस्ख़े 'यज्ञ चिकित्सा' चिकित्सा खंड में देखें। यहां एक छोटा सा नुसखा लिखते हैं।)

[क] (1) गूगल (2) गिलोय (3) बिसौटा–प्रत्येक दो भाग।

[ख] (4) त्रिफला (5) अगर (6) तगर (7) जटामासी (8) मुलहठी (9) मुनक्का –प्रत्येक एक भाग।

[ग] (10) काफ़ूर देशी आधा भाग। (11) देशी शकर ढाई भाग।

(6) संग्रहणी नाशक हवन सामग्री

[क] (1) गूगल (2) गुड़ पुराना – प्रत्येक 4 भाग।

[ख] (3) सफ़ेद जीरा (4) काला जीरा (5) बेल का गूदा (6) सौंठ (7) पीपल (8) कटाई (9) धनियाँ (10) सुगंधकोकिला (11) नागरमोथा (12) अजवायन (13) इन्द्रजौ (14) चिरायता (15) शालपर्णी (16) पृष्ठपर्णी (17) गोखरु (18) लौंग (19) तेजपात (20) हर्र (21) बहेड़ा (22) आंवला (23) छोटी इलायची (24) छोटी इलायची (25) दालचीनी (26) नागकेसर (27) बंसलोचन (28) बादाम की गिरी (29) नारियल

की गिरी (30) छुहारा (31) शीतलचीनी (32) बड़ी इलायची – प्रत्येक 1 भाग।

[ग] (33) केसर (34) काफ़ूर–प्रत्येक १/८ भाग।

(7) मच्छरों को दूर करने वाली हवन सामग्री

[क] (1) गूगल चार भाग।

[ख] (2) हाओबेर (3) सुगन्धकोकिला–प्रत्येक दो भाग।

[ग] (4) ऊद (5) अस्पन्द (6) अकरकरा (7) गन्धक (8) धूप (9) गिलोय (10) तुलसी के पत्ते (11) सहोड़ा की छाल (12) चिरायता (13) चिरायते के फल (14) शकर–प्रत्येक एक भाग।

[घ] (15) लौंग (16) जायफल–प्रत्येक ½ भाग।

(8) साँप भगाने की सामग्री

(1) गूगल, गंधक, बारहसिंगा - समान मात्रा में धूनी देने से सांप भागता है।

(2) लाख, भिलावा, चंदन सफ़ेद, बायबिडंग, गूगल, राल – समान मात्रा में धूनी देने से सांप भाग जाते हैं।

(3) राई और नौसादर (समान मात्रा में) पीस कर चूहे इत्यादि के बिलों में डाल दें तो साँप भाग जावेंगे।

——o——

अध्याय 8

हवन करने की विधि एवं मंत्र

द्रष्टव्य– इन क्रियाओं एवं मंत्रों की विस्तृत व्याख्या जो मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से अति उपयोगी है, 'यज्ञ चिकित्सा' पुस्तक में देखें।

[क] सीधे हाथ की हथेली पर जल लेकर तीन बार आचमन करें।

[ख] फिर बायें हाथ की हथेली पर जल लेकर सीधे हाथ की ऊंगलियों से 'इन्द्रिय स्पर्श' करें।

[ग] फिर ईश्वर का ध्यान करके 'ईश्वर प्रार्थना' करें।

[घ] फिर काफ़ूर जलाकर हवनकुंड में रखी समिधाओं पर रख कर अग्नि प्रदीप्त करें।

[ङ] फिर तीन समिधायें घी में डुबो - डुबोकर कुंड में रखें।

[च] फिर पांच आहुतियां घी की दें।

[छ] फिर कुंड के चारों ओर बनी नाली में (कुंड न बनाया हो तो ऐसे ही) जल छिड़कें।

[ज] फिर चार आहुति घी की दें।

[झ] इसके पश्चात् घी और सामग्री की सोलह आहुतियां दें।

उपर्युक्त सब क्रियायें करने के मन्त्र निम्नलिखित हैं–

आचमन के तीन मन्त्र

1. ओम् अमृतो पस्तरण मसि स्वाहा। इससे पहला आचमन,
2. ओम् अमृता पिधान मसि स्वाहा। इससे दूसरा आचमन,
3. ओम् सत्यं यश: श्रीर्मयि श्री: श्रयतां स्वाहा। इससे तीसरा आचमन।

इन्द्रिय स्पर्श के मन्त्र

1. ओ३म् वाड्म आस्येऽस्तु ।। इससे मुख स्पर्श करें।
2. ओ३म् नसोर्मे प्राणोस्तु ।। इससे दोनों नासिका स्पर्श करें।
3. ओ३म् अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु ।। इससे दोनों आंखें स्पर्श करें।
4. ओ३म् कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ।। इससे दोनों कान स्पर्श करें।
5. ओ३म् बाहनोर्मे बलमस्तु ।। इससे दोनों भुजायें स्पर्श करें।
6. ओ३म् ऊर्वोर्मे ओजोस्तु ।। इससे दोनों जंघाओं पर स्पर्श करें।
7. ओ३म् अरिष्टानि मेऽडानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु ।।
   इससे सारे शरीर पर जल छिड़कें।

प्रार्थना के मंत्र।

1. ओम् विश्वानि देव सवितुर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आसुव ।।

2. ओम् हिरण्यगर्भ: समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

3. ओम् य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवा:।
यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्यु: कस्मै देवाय हविषा विधेम् ।।

4. ओम् य प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।
य ईशे यस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

5. ओम् येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्व: स्तभितं येन नाकः।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमान: कस्मै देवाय हविषा विधेम ।

6. ओम् प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ।।

7. ओम् स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवा अमृतमानशानास् तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ।।

8. ओम् अग्ने नय सुपथाराये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम ।।

अग्नि जलाने एवं प्रदीप्त करने के मंत्र–

1. ओम् भूर्भुव: स्व:।

ओम् भूर्भुव: स्वद्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिमणा।

तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे।।

2. ओम् उदबुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टा पूर्ते सं सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ।।

घृत में डूबी तीन समिधायें एक-एक करके कुंड में रखने के मंत्र

1. ओम् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस् तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्म वर्चसेनान्ना द्येन समेधय स्वाहा।

इदमग्नये जातवेदसे इदन्नमम् ।।

2. ओम् समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्।

अस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा। इदमग्नये इदं न मम् ।

ओम् सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा।

इदमग्नये जातवेदसे इदन्नमम्।।

3. ओम् तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्धयामसि।

बृहच्छोचा यविष्ठय स्वाहा। इदमग्नयेऽङ्गिरसे इदन्नमम् ।

निम्नलिखित मंत्र का पांच बार पढ़ें। प्रत्येक बार घृत की एक एक आहुति दें।

ॐ अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्ते नेध्यस्व वर्धस्व।

चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्म वर्चसे नान्नाद्येन समेधय स्वाहा॥

इदमग्नये जातवेदसे। इदं न मम॥

यज्ञ कुंड के चारों ओर जल छिड़कने के चार मंत्र

1. ओम् अदितेऽनुमन्यस्व ।। इससे पूर्व दिशा में।
2. ओम् अनुमतेऽनुमन्यस्व।। इससे पश्चिम दिशा में।
3. ओम् सरस्वत्यनुमन्यस्व।। इससे उत्तर दिशा में।
4. ओम् देव सवित: प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय।
   दिव्यो गन्धर्व: केतपू: केतं न: पुनातु वाचस्पतिर्वाचं न: स्वदतु।।
   इससे चारों दिशाओं में ।

घृत की चार आहुतियों के चार मंत्र

1. ओम् अग्नये स्वाहा। इदमग्नये इदन्नमम् ।।
2. ओम् सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय इदन्नमम् ।।
3. ओम् प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदन्नमम् ।।
4. ओम् इन्द्राय स्वाहा। इदमन्द्राय इदन्नमम् ।।

घी और सामग्री की 16 आहुतियों के 16 मंत्र

केबल प्रातःकाल के मन्त्र

1. ओम् सूर्योज्योतिर्ज्योति: सूर्य: स्वाहा।
2. ओम् सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्च: स्वाहा।
3. ओम् ज्योति: सूर्य: सूर्यो ज्योति: स्वाहा।
4. ओम् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या जुषाण: सूर्योवेतु स्वाहा।

केबल सायंकाल के मन्त्र

1. ओम् अग्निज्योतिर्ज्योतिरग्नि: स्वाहा।
2. ओम् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्च: स्वाहा।
3. ओम् अग्निज्योतिर्ज्योतिरग्नि: स्वाहा। (यह मंत्र मन में पढ़ें।)
4. ओम् सजूर्देवेन सवित्रा सजूर्गात्र्येन्द्रवत्या जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा।

प्रातः एवं सायं दोनों समय के मंत्र

5. ओम् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा। इदमग्नये प्राणाय इदन्नमम्।।
6. ओम् भुवर्व्वायवेऽपानाय स्वाहा। इदं वायवेऽपानाय इदन्नमम्।।
7. ओम् स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा। इदमदित्याय व्यानाय इदन्नमम्।।
8. ओम् भूर्भुव: स्वरग्निवाय्वादित्येभ्य: प्राणापानव्यानेभ्य: स्वाहा।
   इदमग्नि वाय्वादित्येभ्य: प्राणापान व्यानेभ्य: इदन्नमम्।।
9. ओम् आपो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुव: स्वरों स्वाहा।
10. ओम् यां मेधां देवगणा: पितरश्च उपासते।
    तया मामद्यमेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा।।
11. ओम् विश्वानि देव सवितुर्दुरितानि परासुव।
    यद् भद्रं तन्न आसुव स्वाहा।।
12. ओम् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
    युयोध्यस्मज्जुहु राणमेनो भूयिष्ठान्ते नम: उक्ति विधेम स्वाहा।।
13. ओम् भूर्भुव: स्व:।
    तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न: प्रचोदयात् स्वाहा।।

14-16 ओम् सर्वं वै पूर्ण गुं स्वाहा। (इसे तीन बार पढ़ कर तीन आहुति दें।)

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः।

पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।

वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः।

सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः।

सा मा शान्तिरेधि॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

——०——

रोगियों को स्वास्थ्य का संदेश

'यज्ञ-चिकित्सा' के आविष्कारक, सरकार द्वारा अनेकानेक बार पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त स्वर्गीय पूज्य डा० फुन्दनलाल जी अग्निहोत्री एम० डी०, डी० एस०, एम० आर० ए० एस० (लंदन) इत्यादि, मेडिकल आफ़िसर टी० बी० सेनेटोरियम की देश के विद्वानों तथा समाचार पत्रों द्वारा मुक्तकंठ और एक-स्वर से प्रशंसित पुस्तकें तथा कुछ दवायें ।

हमारे प्रकाशन

(स्वर्गीय) डॉ. फुन्दनलाल अग्निहोत्री

एम.डी.,डी.एस.,एल.एम.आर.ए.एस.(लन्दन) द्वारा लिखित अन्य पुस्तकें :

डॉ. साहब की उपलब्ध पुस्तकों की कागज़ी प्रति (हार्ड कॉपी) से डॉ धुरेन्द्र शास्त्री अग्निहोत्री ने सॉफ्ट कॉपी तैयार की है। यह सभी पुस्तकें वेबसाइट पर निशुल्क Free download के लिए उपलब्ध हैं।

यज्ञ चिकित्सा (क्षय रोग की प्राकृतिक अचूक चिकित्सा)

यह पुस्तक डॉ. फुन्दन लाल जी द्वारा 1940 के लगभग T.B. पर किए गये शोध कार्य पर आधारित है। यह पुस्तक 1949 में छपी थी। उस समय T.B. उतनी ही गम्भीर व्याधि थी जितनी 1960 के दशक में कैंसर थी। उनके इस शोध कार्य पर ब्रिटिश सरकार ने डॉक्टर साहब को पुरुस्कृत करने के साथ जबलपुर में टी. बी.सेनिटोरियम का अध्यक्ष भी नियुक्त किया। सेनिटोरियम में उनकी शोध आधारित चिकित्सा की सफलता का परिणाम 80% पाया गया जबकि शेष 20% भी वह रोगी थे जो सेनिटोरियम में जगह न होने के कारण आस पास किराये की जगह ले कर चिकित्सा करा रहे थे और उसका व्यय वहन न कर पाने के कारण बीच में ही चिकित्सा छोड़ कर चले गये थे।

उनकी चिकित्सा में गाय का दूध, घी, छाछ आदि पदार्थ भी उपयोग होते थे और इन पदार्थों की आपूर्ति के लिए सेनिटोरियम में ब्रिटिश सरकार से स्वीकृत एक गौशाला भी थी ताकि गायों और गौशाला की स्वच्छता और उचित भोजन से इन पदार्थों की अनुकूल गुणवत्ता बनी रहे।

आज़ादी के बाद भारतीय सरकार को सेनिटोरियम में गौशाला होने से भयंकर आपात्ति थी और वह इसे हटाने पर अडिग थी। उस समय के प. रवि शंकर शुक्ला, मौलाना अब्दुल कलाम आज़ाद (यूनियन मिनिस्टर) डॉ राजेंद्र प्रसाद (संविधान सभा के अध्यक्ष, भारत के पहले राष्ट्रपति) आदि जैसे दिग्गज नेताओं को अज्ञात कारणों से यह बात समझने में नहीं आ सकी कि गाय, और गौ शाला की स्वच्छता और उसके भोजन आदि से उसके दूध की गुणवत्ता में भी कुछ फर्क आ सकता है और सारी की सारी सरकारी मशीनरी इस बात पर अडिग रही कि गौशाला हटा कर इन उत्पादों को आउटसोर्स किया जाये। डॉक्टर साहब ने इस बात पर समझौता करना उचित नहीं समझा और सेनिटोरियम के अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे कर अपनी निजी प्रैक्टिस करने का निर्णय लिया और जबलपुर से स्थान परिवर्तन करके उत्तर प्रदेश के बरेली शहर में बापस आ गए और अनेक वर्षों तक अपनी निज़ी प्रैक्टिस की। 15 दिसम्बर 1962 , सायं 4 बजे 82 वर्ष की आयु में उनका निधन हुआ ।

आरोग्य शास्त्र

यह पुस्तक विक्रम संवत 2007 (वर्ष 1950) में छपी थी। पूज्य डॉक्टर साहब का मानना था कि वैद्य , डॉक्टर आदि की सही भूमिका उन बातों का प्रचार और प्रसारण होना चाहिए जिनको दैनिक जीवन में अपना कर हम कभी रोगी ही न हों। इस पुस्तक की पूरी की पूरी प्रष्ठभूमि इसी विचारधारा पर आधारित है। स्वस्थ जीवन या रोगयुक्त जीवन का बीजारोपण तो वाल्यावस्था में ही हो जाता है और जैसा कि हम सभी जानते हैं कि लगभग 12 वर्ष की आयु तक अन्य विषयों के साथ साथ स्वास्थ्य या रोग के बीजारोपण का दायित्व भी माता

- पिता का होता है लेकिन उसके बाद जैसे जैसे किशोरावस्था में बालक आगे बढ़ता जाता है उसके स्वयं के विचार और धारणाएं धीरे धीरे अपना रूप लेने लगती हैं। इसीलिए डॉक्टर साहब ने इस पुस्तक का समर्पण भी नवयुवकों को किया है; जिससे वह स्वास्थ्य के मूलभूत पहलुओं को समझ कर अपना और अपने मित्रों, सम्बन्धियों आदि का भी जीवन सुखमय बना सकें। 1950 में छपी इस पुस्तक में स्वास्थ्य के आवश्यक विभिन्न पहलुओं के साथ साथ व्यायाम , प्राणायाम आदि का महत्व और विधि जैसे विषयों के साथ साथ भिभिन्न ऋतुओं में हमारी दिनचर्या में क्या और कैसे परिवर्तनों की आवश्यकता होती है जैसे विषयों पर भी प्रकाश डाला गया है ।

यह पुस्तक हर उस व्यक्ति के लिए अमृतकोष के समान है जो वास्तव में रोगमुक्त और दीर्घायु जीवन व्यतीत करना चाहता है।

आयुर्वेदिक प्राकृतिक चिकित्सा

यह पुस्तक कुछ देर से 1955 में छपी थी। कुछ देरी से छपने का कारण यह था कि पुस्तक लिखी जाने के बाद डॉक्टर साहब ने तत्कालीन लोकसभा अध्यक्ष श्री गणेश वासुदेव मावलणकर जी से पुस्तक का आमुख लिखने का अनुरोध किया। मावलणकर जी ने आमुख लिखने की एक शर्त रखी कि वह पूरी पुस्तक स्वयं पढ़े बिना आमुख नहीं लिखेंगे और व्यस्तता , समयाभाव आदि के कारण वह यह नहीं बता सकते की उन्हें इस कार्य में कितना समय लगेगा। वास्तव में उन्होंने पूरी पुस्तक पढ़ कर ही अपने विचार उदागर किए और इस कार्य में उन्हें अप्रत्याशित समय लगा क्योंकि उन्होंने अपने व्यस्त कार्यक्रमों के बीच थोड़ा थोड़ा समय निकाल कर इसे शुरू से अंत तक धीरे धीरे पढ़ा। अपने आमुख में एक जगह उन्होंने लिखा “ उन्होंने हरेक चीज़ वेदों में थी ऐसा प्रस्थापित करने का जो प्रयास किया है उसमें मुझे तो शास्त्रीय पद्दति से ज्यादातर उनका वेदों पर प्रेम और भक्ति मालूम होती है। जो उन्होंने कहा है वह सव वेदों में हो या न हो लेकिन वह सत्य है और उनकी बात को स्वीकार करने में ही भारत जैसे

गरीब देश में बिना खर्च या बहुत थोड़े खर्च से जनता के आरोग्य का और बीमारियों के उपचार करने का सवाल आसानी से और ऊंचे ढंग से और शास्त्रीय रीति से हल हो सकता है ऐसा दिखाई पड़ता है ।

इस पुस्तक में डॉक्टर साहब ने जहाँ सप्रमाण यह प्रस्थाप्रित किया है सब ही प्रचलित चिकित्सा विधियों का जन्मदाता आयुर्वेद है और एक सफल चिकित्सक को सब ही चिकित्सा विधियों का ज्ञान होना भी आवश्यक है। केवल धन कमाने के उद्देश्य से दवा वेचना और किसी एक चिकित्सा विधि का ज्ञान प्राप्त कर हर प्रकार और हर प्रकृति के रोगी पर एक ही चिकित्सा विधि का प्रयोग करते रहना और दूसरी सब विधियों का विरोध करना मनुष्य धर्म के विरुद्ध है वहां अपने 50 वर्षीय अनुभव के आधार पर चिकित्सा के उन साधनों का भी वर्णन किया है जो रोगों के उपचार और उन्मूलन में अपना महत्व रखते हैं ।

पुस्तक में प्रचलित चिकित्सा के सम्बन्ध में उसके ही विद्द्वानों की सम्मति , प्राकृतिक चिकित्सा का इतिहास और वर्णन कि उसके लाभ देख कर किस प्रकार बड़े बड़े प्रसिद्ध ऐलोपैथिक डॉक्टरों ने उसे अपनाया, वैदिक जल चिकित्सा, अमेरिका का न्यू हाइजीन ट्रीटमेंट, रोग का वास्तविक कारण, भोजन, उपवास, आदि विषयों की विवेचना के साथ साथ अनेक रोगों की प्राकृतिक चिकित्सा का भी वर्णन किया गया है ।

नोट : यह सभी पुस्तकें इस वेबसाइट पर Free Download के लिए उपलब्ध हैं।

डॉ. धुरेन्द्र शास्त्री अग्निहोत्री बी.एम.एस.,एम.डी.(ए.एम.),एम.डी.(नेचुरोपैथी), ए.आई.ए.सी.एच. (ग्रीस) द्वारा विचाराधीन पुस्तकें :

क्योंकि डॉ. धुरेन्द्र के पूज्य पिता डॉ. श्री फुन्दन लाल जी का देहांत उनकी किशोरावस्था में ही हो गया था जिस कारण उन्हें अपने पिता से चिकित्सा सम्बन्धी विशिष्ठ ज्ञान प्राप्त करने का अवसर तो नहीं मिल सका. तथापि उतने समय के सानिध्य से जितना कुछ भी समझ सके थे, उसके आधार पर उन्होंने

होम्योपैथी में ज्ञान प्राप्त करने का निर्णय लिया और होम्योपैथी में बैचलर ऑफ़ मेडिसिन एंड सर्जरी (B.M.S.) की उपाधि प्राप्त की। जब वह इस पाठ्यक्रम के अंतिम बर्ष में थे, उनकी पूज्य माता को कैंसर हुआ और वह यह देख कर गहरा सदमा और आश्चर्य हुआ कि जिस चिकित्सा विधि को वह सर्वोपरि समझ रहे थे उसमें अत्यंत निपुण एवं अनुभवी ऐसे डॉक्टर जिनके पास लगभग 100 रोगी नित्य आया करते थे, उनके मार्गदर्शन में पूरी तन्मयता से चिकित्सा करने के बाद भी उनकी माता बच न सकीं। इस घटना ने उन्हें यह सोचने पर मजबूर किया कि कहीं न कहीं होम्योपैथी में कुछ कमी तो है और वह उसे दूंढने में लग गये। उन्होंने पाया कि होम्योपैथी के भी प्राचीन ग्रंथों में गम्भीर रोगों की चिकित्सा में औषधियों के साथ अनेक उपसाधनों का भी जिक्र है जो नेचुरोपैथी पर आधारित थे। साथ ही उन्होंने अपने पूज्य पिताजी की उन पुस्तकों का भी दुबारा अध्ययन किया जिन्हें उन्होंने बचपन में आधी अधूरी समझ के साथ पढ़ा था। साथ ही उन्होंने अपने पूज्य पिताजी की एक ऐसी पुस्तक “आहार चिकित्सा” जिसका प्रकाशन नहीं हो सका था लेकिन उसकी हस्त लिखित प्रतिलिपि कुछ जीर्ण क्षीर्ण अवस्था में उपलब्ध थी, उसे भी पढ़ा। इस सब से उन्हें यह समझ में आया कि त्वरित (एक्यूट) बीमारियों में तो होम्योपैथी अपने आप में बहुत कारगर है लेकिन क्रोनिक और गंभीर रोगों के सफल, सम्पूर्ण और स्थायी उपचार के लिए उसके साथ साथ नेचुरोपैथी को भी अपनाना आवश्यक है और इस सबमें भोजन तो सर्वोपरि है जिसे ठीक किए बिना अच्छी से अच्छी दवा भी अपना काम नहीं कर सकती। अतः इन विधियों को भी अपनी चिकित्सा में शामिल करने के लिए उन्होंने M.D.(A.M.) और M.D.(Nat.) की शिक्षा भी ली। साथ ही अपने होम्योपैथी के ज्ञान को और पुख्ता करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण पुरुस्कार the **Right Livelihood Award** (also known as the "Alternative Nobel Prize") के साथ साथ अन्य कई पुरूस्कार प्राप्त Shree George Vithoulkas ग्रीस द्वारा प्रस्थापित इंटरनेशनल एकेडेमी ऑफ़ क्लासिकल होम्योपैथी से होम्योपैथी के एडवांस शिक्षा भी प्राप्त की।

उन्होंने सभी गम्भीर रोगों की अपनी चिकित्सा पद्धति में होम्योपैथी के साथ, घर पर ही की जा सकने योग्य नेचुरोपैथी, भोजन सुधार , योग, एक्यूप्रेशर और हेर्बलिस्म का समन्वय करके गम्भीर रोगों से जूझ रहे अनेक रोगियों का सफल उपचार किया। यद्दपि बहुत देर से, लेकिन अब 79 वर्ष की आयु में परमपिता परमात्मा ने उनके मन में विचार उत्पन्न किया कि इस समन्वित चिकित्सा विधि द्वारा गम्भीर रोगों की सफल चिकित्सा के विस्तृत विवरण को पुस्तकों का रूप दे दिया जाये जिससे उनके जीवनोपरान्त भी यह ज्ञान इच्छुक चिकित्सकों और रोगियों का मार्गदर्शन करता रहे।

हांलाकि यह लेखन कार्य अभी अपनी विल्कुल प्रारम्भिक अवस्था में है, फिर भी यहां इसकी चर्चा केवल इस उद्देश्य से करना प्रासंगिक लगा ताकि यह डॉ. धुरेन्द्र का संकल्प बन कर उन्हें इस कार्य को जल्द से जल्द अपने अंजाम तक पहूंचाने की प्रेरणा देता रहे।

क्योंकि स्वस्थ बने रहने और रोगोपचार दोनों में ही उचित आहार का महत्वपूर्ण योगदान है और भोजन सुधार के बिना किसी भी चिकित्सा विधि से गम्भीर रोग कदापि ठीक नहीं किए जा सकते इसलिए हम सर्वप्रथम इस विषय पर पुस्तक उपलब्ध करने का विचार रखते हैं। उसके बाद दूसरे आवश्यक साधन योग, प्राणायाम आदि पर और उसके बाद ओबेसिटी (मोटापा) जो अपने आप में एक गम्भीर समस्या होने के साथ अनेक दूसरी गम्भीर बीमारियों का जन्मदाता भी है। उसके बाद एक एक करके क्रमशः दूसरी गम्भीर बीमारियों के सफल और स्थायी उपचार से सम्बंधित। प्रभु हमें इस कार्य की शीघ्र पूर्ण करने की शक्ति और सामर्थ्य प्रदान करें ऐसी प्रार्थना है।

विचाराधीन पुस्तकों की सूची

1. भोजन और स्वास्थ्य : (स्वास्थ्य और उपचार में भोजन का महत्व)

2. व्यापक योग

3. मोटापा कारण और निवारण
4. कैंसर कारण और निवारण
5. हृदय रोग कारण और निवारण
6. डायबिटीज कारण और निवारण
7. वात रोग कारण और निवारण
8. श्वसन रोग कारण और निवारण
9. पाचन रोग कारण और निवारण
10. यकृत के रोग कारण और निवारण
11. किडनी के रोग कारण और निवारण
12. महिलाओं के रोग कारण और निवारण

हमारे हर्बल उत्पाद

सामान्यतया हर्बलिज्म का मतलब आयुर्वेदिक समझ लिया जाता है जबकि दोनों में थोड़ा अन्तर है। जड़ी बूटियों का उनके प्राकृतिक रूप में उपयोग हर्बलिज्म में आता है जब कि आयुर्वेदिक दवाओं में जड़ी बूटियों को कच्चे मॉल की तरह उपयोग करके उनका प्रसंस्करण किया जाता है। जड़ी बूटियों के प्राकृतिक रूप में उनका रस, छायादार धूप में सुखा लेना, उनका पाउडर ही सम्मिलित है जो बिना किसी प्रसंस्करण के किया जाता है. उदाहरण के रूप में हम कह सकते हैं कि प्राकृतिक सब्जियों, सलाद, उबली हुई सब्ज़ी, मसाले दार सब्ज़ी और पनीर की सब्ज़ी, या दूध और मावा, दूध से बनी मिठाइयां आदि में जो अंतर है कुछ वैसा ही अंतर हर्बलिज्म और आयुर्वेदिक दवाओं में है. जिस प्रकार किसी रोग स्थिति में कुछ सब्जियां, फल आदि लाभप्रद और कुछ हानिकारक हो सकती हैं; उसी तरह रोग अवस्था में कुछ जड़ी बूटियां उस रोग के उपचार में अत्यंत सहायक होती हैं

और उनके उपयोग में उन व्यक्तियों को भी कोई हानि नहीं होती है जिन्हें आयुर्वेदिक दवाओं से असुविधा होती है।

स्वास्थ्य भण्डार के सभी उत्पात अत्यंत विशिष्ट हैं और केवल हमारे पास ही उपलब्ध हैं। हमने जानबूझ कर इनके व्यापक मार्केटिंग का प्रयास नहीं किया है क्योंकि ऐसा करने से:

1. इनकी कीमत कई गुना बढ़ जाएगी। और
2. इसके लिए हमें बाज़ार में अपनी स्थिति मज़बूत बनाने के लिए व्यावसायिक रणनीतियों को भी अपनाना पड़ेगा, जिससे हमारे उत्पादों की प्रभावशीलता पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा।

हमारे सभी उत्पाद बिल्कुल प्राकृतिक हैं और इनमें किसी भी प्रकार के प्रिजर्वेटिव, एडिटिव, रंग, गंध आदि का उपयोग नहीं किया गया है।

हमारे हर्बल उत्पादों की सूची

A. सामान्य चूर्ण (पाउडर)

SR. NO.	नाम	कोड	उपयोग
1	**अश्वगंधा**	101	किसी भी प्रकार की व्यग्रता, उत्कंठा , तनाव आदि में राहत देकर आरामदायक, प्राकृतिक नींद देने और संज्ञानात्मक कार्यप्रणाली को सक्षम बनाने में मददगार।
2	**आमला**	102	विटामिन सी का अदभुत शक्ति श्रोत, एक शक्ति शाली रोग प्रतिरोधक क्षमता और श्वेत रक्त कोशिकाओं को बढ़ाने वाला, एंटी ऑक्सीडेंट्स, फाइटोकेमिकल्स से भरपूर, ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस और

			सूजन को कम करने में सक्षम जो कई गम्भीर बीमारियों का कारण बनती है। शरीर से प्राकृतिक रूप से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालने और मस्तिष्क की कार्य क्षमता बढ़ाने में समर्थ।
3	**अर्जुन**	103	एक अच्छा एंटीऑक्सीडेंट, टैनिंस और ग्लाइकोसाइड्स युक्त, फ्री रेडिकल्स से लड़ने में सक्षम, हार्ट की मांसपेशियों और रक्त वाहिकाओं का रक्षक, धमनियों को चौड़ा करने और धमनियों में जमे द्रव्यों को गलाने, पिघलाने में सक्षम।
4	**ब्राह्मी**	104	एक शक्ति शाली एंटी ऑक्सीडेंट्स, सूजन कम करने और मस्तिष्क की कार्य क्षमता को बढ़ाने में सक्षम। इसमें मौजूद बाकोसाइड्स मस्तिष्क की कोशिकाओं में समन्वय बनाने, याददाश्त, ध्यान, और नए ज्ञान को लम्बे समय तक याद रखने की क्षमता को बढ़ाने में सक्षम। कोर्टिसोल को संतुलित करके शारीरिक और भावनात्मक तनाव को कम करने में सक्षम। इसका नियमित उपयोग शांति और संतुलन को बढ़ा कर एकाग्रता, मानसिक सहन शक्ति, और सूचना प्रसंस्करण गति में सुधार करता है जिससे बच्चों और व्यस्कों में ए डी एच डी के लक्षणों को प्रतिबंधित करने में मदद करता है। इसके शांत और शामक गुण मानसिक बक बक को कम करने और बेहतर नींद की गुणवत्ता को बढ़ावा देने में मदद करते हैं।
5	**हरीतकी**	105	इम्यूनिटी वर्धक, पाचक रसों का उत्पादन और अवशोषण बढ़ाकर पाचन सुधार में सक्षम। इसमें

			मौजूद टैनिंस और फ्लेवोनॉयड्स शरीर से विषहरण करके उसकी सफाई में सहायक। लिवर, खून और गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल ट्रैक्ट से टॉक्सिन और व्यर्थ पदार्थों को बाहर निकाल कर शरीर की प्राकृतिक सफाई में सहायक।
6	**पिप्पली**	106	इम्यूनिटी और चयापचय बढ़ाने, टॉक्सिंस निकालने, पाचन और अवशोषण में सहायक। वायु मार्ग से बलगम को साफ़ करने में मदद करता है और अस्थमा ब्रोंकाइटिस आदि जैसी स्थितियों के प्रबंधन में सहायक।
7	**पुनर्नवा**	107	शरीर को उत्कृष्ट रूप से फिर से जीवंत करता है। वात, पित्त और विशेष रूप से कफ़ को शांत करता है। पाचन तंत्र को उत्तेजित करता है। यकृत, गुर्दे, हृदय और जोड़ों के लिए एक प्रसिद्ध टॉनिक। फेफड़ों और श्वसन पथ में अतिरिक्त कफ़ को भी पिघलाने में सक्षम।
8	**सफ़ेद मुसली**	108	एक भारतीय वियाग्रा, एक प्राकृतिक प्रजनन समाधान, स्वस्थ शुक्राणुओं की मात्रा बढ़ाने में सक्षम, हार्मोनल संतुलन के सुधार में सक्षम, थायराइड और अनियमित मासिक धर्म की समस्याओं के नियंत्रण में सहायक, रक्त शर्करा के नियंत्रण और इंसुलिन संवेदनशीलता के सुधार में सहायक, साथ ही गठिया, चिंता और अवसाद में भी सहायक।

9	**शतावरी**	109	सैपोनिन और, रेसमोफुरन से समृद्ध, एंटीऑक्सिडेंट, सूजन निरोधी, मूत्रवर्धक, क्षमताओं से भरपूर; प्रतिरक्षा को बढ़ावा देने, निर्जलीकरण और इलेक्ट्रोलाइट असंतुलन का प्रबंधन करने में सक्षम; गैस्ट्रिक अल्सर, गुर्दे की पथरी के इलाज़ में अत्यंत सहायक, कोलेजन टूटने को रोकने, इंसुलिन उत्पादन में सुधार करने में भी सक्षम।
10	**शंखपुष्पी**	110	संज्ञानात्मक बूस्टर - स्मृति, फोकस और समस्या को सुलझाने के कौशल को बढ़ाने में सक्षम। अवसादग्रस्तता-विरोधी, चिंता-विरोधी, शांति और मानसिक स्पष्टता प्रदान करने में सक्षम। न्यूरोप्रोटेक्टिव गुणों के साथ एक शक्तिशाली मस्तिष्क टॉनिक के रूप में कार्य करने में सक्षम।
11	**सितोपलादि**	111	श्वसन संबंधी विकारों का एक प्राचीन अच्छी तरह से सिद्ध समाधान - ब्रोंकाइटिस, अस्थमा, सीओपीडी, तपेदिक, खांसी, साइनासाइटिस, एलर्जिक राइनाइटिस, हथेलियों और पैरों में जलन आदि में प्राचीन काल से उपयोग में। इसके प्रमुख गुणों में कफ निस्सारक, सूजन निरोधी, और प्रतिरक्षा - संशोधक होना शामिल है। यह फेफड़ों और वायुमार्ग से कफ और बलगम को ढीला करने और बाहर निकालने में मदद करने के लिए एक कफ निस्सारक के रूप में कार्य करने और सांस लेना आसान करने के लिए वर्षों से जाना जाता है।

12	**त्रिफ़ला 1:2:4**	112	इसमें विटामिन सी, फ्लेवोनोइड्स, पॉलीफेनोल्स, टैनिन, सैपोनिन और अन्य शक्तिशाली पौधीय यौगिक होते हैं। एंटीऑक्सिडेंट, डिटॉक्सिफायर, रेडियोप्रोटेक्टिव, केमोप्रोटेक्टिव में उच्च, आहार, प्रतिरक्षा, चयापचय, पाचन को बढ़ावा देने, हृदय रोग, कुछ कैंसर, मधुमेह और समय से पहले उम्र बढ़ने के जोखिम को कम करने में सक्षम।
13	**त्रिफ़ला 1:2:4 (केवल छोटे टुकड़ों में तोड़ा हुआ)**	113	इसमें विटामिन सी, फ्लेवोनोइड्स, पॉलीफेनोल्स, टैनिन, सैपोनिन और अन्य शक्तिशाली पौधीय यौगिक होते हैं। एंटीऑक्सिडेंट, डिटॉक्सिफायर, रेडियोप्रोटेक्टिव, केमोप्रोटेक्टिव में उच्च, आहार, प्रतिरक्षा, चयापचय, पाचन को बढ़ावा देने, हृदय रोग, कुछ कैंसर, मधुमेह और समय से पहले उम्र बढ़ने के जोखिम को कम करने में सक्षम। आंखों की दृष्टि रक्षा, कई रोग और दृष्टी वर्धन में सक्षम। साबुत होने के कारण इसे भिगोए हुए पानी से आँखें धोने के लिए भी उपयुक्त।

B. हमारी विशिष्ट उपयोगों की हर्बल चाय

1	**हर्बल टी - रेगुलर**	201	सीटीसी या ग्रीन टी का एक स्वस्थ विकल्प। एंटीऑक्सिडेंट, और एडाप्टोजेन से समृद्ध (एडाप्टोजेन्स अर्थात् ऐसे गैर-विषाक्त - पौधे, जड़ी-बूटियाँ जो शरीर को शारीरिक, मानसिक और रासायनिक तनावों का बेहतर ढंग से सामना करने में मदद करते हैं, शरीर को एक स्थिर अवस्था में

			लाने में मदद करते हैं, सहनशक्ति, ध्यान और मानसिक कार्यक्षमता को बेहतर बनाने में सहायक होते हैं। प्रतिरक्षा और चयापचय को बढ़ावा देते हैं।
2	**हर्बल टी - स्रोतास**	202	धमनियों के अवरोधों को दूर करने, बी पी और हृदय की अन्य समस्याओं को ठीक करने में मदद करती है। सीटीसी और/या ग्रीन टी के बदले नियमित रूप से सेवन करने पर हृदय की समस्याओं और कैंसर के लिए एक निवारक के रूप में भी कार्य करती है। हृदय की समस्याओं में सर्वोत्तम परिणामों के लिए हृदयामृत के साथ उपयोग करें। इस प्रकार की समस्याओं में आहार और जीवन शैली सम्बन्धी दिशानिर्देशों और सम्पूर्ण उपचार के लिए हमारी वेबसाइट देखें।
3	**हर्बल टी - अंग स्थिरा**	203	रुमेटिक रोगों, जोड़ों के दर्द, गठिया, और अन्य सभी वात रोगों के उपचार में सहायक। इस प्रकार की समस्याओं में आहार और जीवन शैली सम्बन्धी दिशानिर्देशों और सम्पूर्ण उपचार के लिए हमारी वेबसाइट देखें।
4	**हर्बल टी - प्राण**	204	अस्थमा, सीओपीडी, क्रोनिक ब्रोंकाइटिस आदि पुरानी श्वसन समस्याओं के उपचार में सहायक। इस प्रकार की समस्याओं में आहार और जीवन शैली सम्बन्धी दिशानिर्देशों और सम्पूर्ण उपचार के लिए हमारी वेबसाइट देखें।

5	**हर्बल टी - नियंत्रा**	205	मधुमेह के उपचार में सहायक, इसे अपने नियमित सीटीसी या ग्रीन टी के विकल्प के रूप में उपयोग करें। मधुमेह में आहार और जीवन शैली सम्बन्धी दिशानिर्देशों और सम्पूर्ण निवारण के लिए हमारी वेबसाइट देखें।
6	**हर्बल टी - परिजात**	206	एक प्राकृतिक एनाल्जेसिक, सूजन निरोधी यौगिकों, फ्लेवोनोइड्स और ग्लाइकोसाइड से भरपूर। गठिया आदि जैसी स्थितियों के उपचार में उल्लेखनीय मदद मिलती है। शरीर के पुराने दर्द को कम करती है, रक्त परिसंचरण को बढ़ाकर सूजन और दर्द को कम करती है।
7	**हर्बल टी - आम पत्र**	207	फ्लेवोनोइड्स और एंटीऑक्सिडेंट, विटामिन सी, पॉलीफेनोल्स, मैंगिफेरिन से भरपूर। रक्त शर्करा, रक्तचाप, एसिड रिफ्लेक्स, गैस्ट्रिक अल्सर, तनाव और चिंता को नियंत्रित करने में मदद करती है। यकृत और गुर्दे के कार्य का भी समर्थन करती है।
8	**हर्बल टी - अमरूद पत्र**	208	एंटी-इंफ्लेमेटरी, एंटी-माइक्रोबियल , एंटीऑक्सिडेंट, विटामिन ए और सी से भरपूर पाचन स्वास्थ्य का समर्थन करती है। बी पी और कोलेस्ट्रॉल, एल डी एल को नियंत्रित करती है।, इंसुलिन संवेदनशीलता में सुधार करती है। मुक्त कणों से लड़ने में भी सक्षम।
9	**हर्बल टी - शीतहारी**	209	खांसी और जुकाम से तेजी से राहत दिलाने में मदद करती है। खांसी और सर्दी के कारण होने वाली

			बेचैनी, संताप और असहजता से शीघ्र राहत प्रदान करती है। ज्यादा अच्छे परिणामों के लिए इसके साथ साथ शीतहारी चूर्ण का भी सेवन करें।

C. हमारे प्राकृतिक मधुरक (स्वीटनर्स)

1	**रॉ शहद**	301	हिमालय की बहुत ऊंचाई वाली घाटियों से इकठ्ठा किया गया, सरकारी मान्यता प्राप्त लैब में जांचा, परखा, कच्चा जैविक प्राकृतिक 100% शुद्ध शहद।
2	**स्टीविया की सूखी पत्तियां**	302	शून्य कैलोरी, शून्य कार्बोहाइड्रेट और खनिजों के एक बंडल से युक्त, रिफाइंड चीनी का बिल्कुल हानिरहित और स्वस्थ विकल्प। सूरज की छायादार धूप में सुखाई गई स्टीविया की सूखी पत्तियां। बिल्कुल असंसाधित और किसी योजक या परिरक्षक के प्रयोग के बिना। आयरन, प्रोटीन, फाइबर, पोटैशियम, विटामिन ए और विटामिन सी जैसे पोषक तत्त्वों से भरपूर। रक्तचाप को नियंत्रित करने और हृदय रोगों के जोखिम को कम करने में, रक्त शर्करा के अवशोषण को कम करने में, और वजन घटाने में सहायक। अधिक मीठा खाने की इच्छा को कम करने में भी सहायक।
3	**स्टीविया का पाउडर**	303	ऊपर वर्णित सूरज की छायादार धूप में सुखाई गई स्टीविया की सूखी पत्तियों का पाउडर। बिल्कुल असंसाधित और किसी योजक या परिरक्षक के प्रयोग के बिना। उपरोक्त सभी गुणों से युक्त, केवल उपयोग

			में आसान कर देने के लिए पीसी गई स्टीविया की पत्तियों का पाउडर।

D. हमारे अपने फॉर्मूलेशन्स (प्राकृतिक जड़ी बूटियों का मिश्रण)

OUR PROPRIETARY FORMULATIONS

1	**शीतहारी चूर्ण**	401	सर्दी, खांसी, जुकाम आदि में तेज़ी से राहत दिलाने में सक्षम। इस प्रकार की समस्याओं से होने वाली बेचैनी, आकुलता, व्याकुलता, व्यग्रता आदि से शीघ्र राहत देने में अत्यन्त लाभकारी। सर्वोत्तम परिणामों के लिए सौम्य शीतहारी चाय के साथ उपयोग करें।
2.	**हृदयामृत**	402	धमनियों के ब्लाकेज आदि सहित हृदय के समस्त रोगों के लिए एक आदर्श हर्बल उत्पाद। सर्वोत्तम परिणामों के लिए हर्बल टी - स्रोतास के साथ उपयोग करें। इस प्रकार के रोगों में वांच्छित आहार, जीवन शैली सम्बन्धी दिशानिर्देशों और सम्पूर्ण चिकित्सा के लिए हमारी वेबसाइट देखें।
3	**हृदय - वासासान्तक**	403	कोलेस्ट्रॉल और ट्राइग्लिसराइड्स को कम करने के लिए एक आदर्श और प्रभावी हर्बल उत्पाद। इस प्रकार के रोगों में वांच्छित आहार, जीवन शैली सम्बन्धी दिशानिर्देशों और सम्पूर्ण चिकित्सा के लिए हमारी वेबसाइट देखें।

4	**संधि - वातान्तक**	404	जोड़ों के दर्द, आर्थराइटिस, गठिया, और सभी आमवाती समस्याओं के लिए एक आदर्श और प्रभावी हर्बल उत्पाद। इस प्रकार के रोगों में वांच्छित आहार, जीवन शैली सम्बन्धी दिशानिर्देशों और सम्पूर्ण चिकित्सा के लिए हमारी वेबसाइट देखें।
5	**दमनान्तक चूर्ण**	405	पुरानी श्वसन समस्याओं जैसे अस्थमा, सी ओ पी डी, क्रोनिक ब्रोंकाइटिस आदि के लिए एक प्रभावी हर्बल उत्पाद। इस प्रकार के रोगों में वांच्छित आहार, जीवन शैली सम्बन्धी दिशानिर्देशों और सम्पूर्ण चिकित्सा के लिए हमारी वेबसाइट देखें।
6	**मधुहारी**	406	मधुमेह (डायबिटीज) के लिए एक प्रभावी हर्बल उत्पाद। इस प्रकार के रोगों में वांच्छित आहार, जीवन शैली सम्बन्धी दिशानिर्देशों और सम्पूर्ण चिकित्सा के लिए हमारी वेबसाइट देखें।
7	**LIV - SB**	407	लिवर को डिटॉक्सीफाई करने और फैटी लीवर, पीलिया, हेपेटाइटिस, जलोदर, सिरोसिस आदि जैसी लिवर संबंधित समस्याओं को ठीक करने के लिए एक प्रभावी हर्बल उत्पाद। इस प्रकार के रोगों में वांच्छित आहार, और जीवन शैली सम्बन्धी दिशानिर्देशों और सम्पूर्ण चिकित्सा के लिए हमारी वेबसाइट देखें।

8	**वात-सोनीतान्तक**	408	यूरिक एसिड को कम करने के लिए एक प्रभावी हर्बल उत्पाद। इस प्रकार के रोगों में वांच्छित आहार, जीवन शैली सम्बन्धी दिशानिर्देशों और सम्पूर्ण चिकित्सा के लिए हमारी वेबसाइट देखें।
9	**रक्तचापान्तक**	409	उच्च रक्तचाप को कम करने के लिए एक प्रभावी हर्बल उत्पाद। इस प्रकार के रोगों में वांच्छित आहार, जीवन शैली सम्बन्धी दिशानिर्देशों और सम्पूर्ण चिकित्सा के लिए हमारी वेबसाइट देखें।
10	**मूत्रघटान्तक**	410	मूत्र ट्रैक में संक्रमण (UTI) के लिए एक प्रभावी हर्बल उत्पाद। इस प्रकार के रोगों में वांच्छित दिशानिर्देशों और सम्पूर्ण चिकित्सा के लिए हमारी वेबसाइट देखें।
11	**मेध्या**	411	मस्तिष्क की कार्य क्षमता को बढ़ाने, मानसिक सहन शक्ति, शांति और संतुलन बनाने, स्मृति, फोकस और समस्या सुलझाने के कौशल को बढ़ाने, एकाग्रता, ध्यान, याददाश्त और नए ज्ञान को लम्बे समय तक याद रखने की क्षमता को बढ़ाने में अद्वितीय। कोर्टिसोल को संतुलित करके शारीरिक और भावनात्मक तनाव को कम करने में सक्षम। विद्यार्थियों, मस्तिष्क सम्बन्धी कार्य करने वालों और तनाव पूर्ण परिस्थितियों में कार्य करने वालों के लिए अत्यन्त लाभकारी और अवश्य सेवनीय शक्तिशाली मस्तिष्क टॉनिक।

12	**पाचक रसायन**	412	पाचन तंत्र में प्राकृतिक रूप से सुधार करता है।
13	**टेस्टोजाइम**	413	पेट की समस्याओं जैसे अपच, मंदाग्नि, एसिडिटी, गैस, भूख या स्वाद की कमी, अफरा, आदि को ठीक करने के लिए एक प्रभावी उत्पाद।
14	**नितान्त**	414	हर तरह के कब्ज जैसी समस्याओं का प्राकृतिक समाधान।
15	**निशान्त**	415	दस्त, पेचिश, आई बी एस, कोलाइटिस आदि का प्रभावी समाधान।

E. आसवन प्रक्रिया से बनाए गए कुछ प्राचीन प्राकृतिक अर्क :

1	**तुलसी अर्क**	501	फाइटोकेमिकल्स, एंटीऑक्सिडेंट और आवश्यक तेलों से समृद्ध। एक प्राकृतिक प्रतिरक्षा बूस्टर, सामान्य सर्दी, खांसी और बुखार को दूर रखता है। अस्थमा, सी ओ पी डी और ब्रोंकाइटिस जैसे सभी श्वसन विकारों में सबसे उपयोगी। अल्सर, कब्ज आदि में भी लाभकारी।
2	**पुदीना अर्क**	502	पाचन सम्बन्धी समस्याओं, अपच, पेट में बेचैनी, भारीपन, पेट फूलना, मतली, उल्टी, पेट दर्द, सूजन आदि में उपयोगी। पेट के स्तर पर पित्त और वात को संतुलित करता है।
3	**नीम अर्क**	503	रोगाणुरोधी, सूजनरोधी और एंटीऑक्सीडेंट गुणों से भरपूर। एक प्रतिरक्षा बूस्टर, रक्त शोधक, संक्रमण,

			सूजन और कैंसर कोशिकाओं से लड़ने में सक्षम। श्वसन, पाचन, दंत और त्वचा रोगों में भी उपयोगी।

F. हमारे नेत्र रक्षा सम्बन्धी उत्पाद

1	**गुलाब जल आई ड्रॉप्स**	601	आसवन प्रक्रिया के साथ बनाया गया 100% शुद्ध गुलाब जल। कई नेत्र रोगों का एक प्रभावी समाधान।
2	**नेत्रामृत**	602	इसके नियमित उपयोग से चश्मा दूर रहेगा। आंखों के कई रोगों को ठीक करता है। कंप्यूटर, मोबाइल जैसी स्क्रीन पर अधिक काम करने वालों के लिए वरदान स्वरुप। आंखों की रोशनी और आंखों की बीमारियों के लिए प्रभावी होने के कारण, कुछ सेकंड के लिए आंखों में थोड़ी उत्तेजना होती है जो कुछ सैकड़ों में ही धीरे धीरे ठीक हो जाती है।
3.	**मोतियाबिंद नाशक** **Cataract cure**	603	कच्चे मोतियाबिंद को बिना सर्जरी के ही गला कर समाप्त करने में सक्षम, लेकिन मोतियाबिंद पक जाने पर कोई भी लाभ नहीं कर सकता। एक 100 % धर्मार्थ उत्पाद। हमारे क्लीनिक से कोई भी व्यक्ति निःशुल्क प्राप्त कर सकता है। दूर दराज़ के लोग भी केवल कोरियर शुल्क दे कर निसंकोच ले सकते हैं।

G. हमारे विशिष्ट उपयोग के तेल

1.	**न्यूरोशांतक**	701	हर तरह के जोड़ों के दर्द, स्पोर्ट्स इंजरी, मांसपेशियों के दर्द आदि में तुरन्त आराम देने में सक्षम। यह

			तुरन्त आराम देने के लिए एक दर्द निवारक (पेन किलर) के रूप में काम करता है।
2.	**रुहमा ऑयल**	702	सभी प्रकार के जोड़ों के दर्द, अर्थराइटिस, गठिया, स्पोर्ट्स इंजरी आदि सभी वात रोगों के दीर्घकालिक उपचार में सहायक। धीरे धीरे लगातार स्थाई आराम देने में सक्षम।
3.	**पक्षाघातान्तक ऑयल**	703	पक्षाघात (पैरालिसिस) के उपचार में और उसके स्थाई उपचार में अत्यंत सहायक।
4.	**लौंग का तेल**		दांत दर्द, मसूड़ों की समस्याओं, जोड़ या मांसपेशियों के दर्द और फंगल इन्फेक्शन आदि में तेज़ी से राहत देने में सक्षम।
5.	**नीम का तेल**	704	दांतों की देखभाल के लिए अद्वितीय रूप से अत्यंत उपयोगी। दांतों की सड़न और मसूड़ों की बीमारियों को रोकने में अद्वितीय। नियमित रूप से अपने टूथ ब्रश पर थोड़ा सा टूथ पेस्ट फैला कर उसके ऊपर दो बूंद नीम का तेल डाल कर ब्रश करने से कैबिटी सहित दांतों के समस्त रोगों से लम्बे समय तक सुरक्षित रखने में अत्यधिक सक्षम।

H. हमारे ट्रॉमा केयर उत्पाद

1.	**दाह - हरु**	801	जल जाने की स्थिति में उपयोगी। जली हुई त्वचा को जल्दी ठीक करने में उपयोगी। जल जाने पर ज़ल्दी ही लगा लेने पर छाले न पड़ने ने में भी सक्षम।

I. हमारे सिर और बाल सम्बन्धी उत्पाद

1	**रूक्षतामृत**	901	सिर की रूसी, बाल झड़ना, कैनाइटिस (समय से पहले बालों का सफ़ेद होना) आदि में अत्यन्त उपयोगी। किसी भी प्रकार के केमीकल से रहित एक बिल्कुल प्राकृतिक क्लींजर और कंडीशनर, बालों का स्वास्थ्य रक्षक, रूसी, बालों का झड़ना और पहले ही सफैद होने आदि का प्रभावी उपचारक।
2.	**केश तरंग**	902	बालों का प्राकृतिक रक्षक, बालों को लंबा और काला करने और लम्बे समय तक उनके स्वास्थ्य की रक्षा करने में पूर्णतया सक्षम। चूर्ण के रूप में एक प्रकार का प्रभावी सारकृत (कंसंट्रेट) शैम्पू और कंडीशनर जिसे प्रयोग के पहले कुछ घंटों तक पानी में भिगो कर तरल (लिक्विड) रूप में उपयोग करना होता है।

J. हमारे सामान्य स्वास्थ्य रक्षक उत्पाद

1.	**शिलाजीत**	1101	फुल्विक एसिड और 84 आवश्यक खनिजों से समृद्ध एक प्राकृतिक स्वास्थ्य पूरक। स्वाभाविक रूप से ऊर्जा और सहनशक्ति को बढ़ाता है, संज्ञानात्मक कार्य में सुधार करता है, प्रतिरक्षा को मजबूत करता है, हृदय स्वास्थ्य का समर्थन करता है, हार्मोन को संतुलित करता है, प्रजनन क्षमता में सुधार करता है, हड्डियों को मजबूत करता है और नींद की गुणवत्ता में सुधार करता है।

2.	**तुलसी के पत्ते**	1102	फाइटोकेमिकल्स, एंटीऑक्सिडेंट और आवश्यक तेलों से समृद्ध। प्राकृतिक छायादार धूप में सुखाए गए तुलसी के पत्ते। प्रतिरक्षा प्रणाली, तंत्रिका तंत्र, हृदय, श्वसन संबंधी समस्याओं, खांसी, जुकाम, बुखार, संक्रमण आदि में उपयोगी।
3.	**नीम कैप्सूल**	1103	छायादार धूप में सुखाए गए नीम के पत्तों का चूर्ण कैप्सूल में। शक्तिशाली सूजनरोधी, रोगाणुरोधी और एंटीऑक्सीडेंट गुणों से भरपूर। मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया, टाइफाइड और वायरल बुखार जिसमें पोलियोवायरस, एचआईवी, कॉक्ससैकी बी ग्रुप वायरस आदि शामिल हैं, के इलाज में लाभकारी। हृदय, रक्त वाहिकाओं, यकृत, गुर्दे, गैस्ट्रिक अल्सर, मधुमेह, आंतों के कीड़े, कुष्ठ रोग, यूटीआई, मसूड़ों के रोग, नेत्र विकार, अस्थमा, सीओपीडी, कम शुक्राणुओं की संख्या, बवासीर और यहां तक कि कैंसर जैसी समस्याओं में भी लाभकारी।
4.	**हर्बल टूथ पेस्ट**	1104	सामान्यतया बाजार में उपलब्ध ब्रांडेड हर्बल टूथ पेस्ट में भी केवल 10-15% जड़ी-बूटियाँ और शेष रसायन होते हैं; जबकि इस पेस्ट में 67% जड़ी-बूटियाँ होती हैं, उनमें से कुछ उपयोग किए जाने वाले रसायनों के प्रभाव को काफी कम करने में भी सक्षम हैं। टूथ ब्रश पर थोड़ा सा पेस्ट फैलाएं, हमारे नीम के तेल की दो बूंदें डालें। कैविटी और दांत और मसूड़ों की अन्य समस्याओं को दूर रखने के लिए नियमित रूप से उपयोग करें।

5.	**हवन धूप**	1105	सिंथेटिक सुगंध मुक्त, लेकिन उत्तम क्वालिटी की शुद्ध जड़ी बूटियों की प्राकृतिक सुगन्ध से भरपूर शुद्ध धूप। व्यस्त जीवन शैली के कारण दैनिक हवन करने जैसी संस्कृति के पालन की असमर्थता का बिल्कुल सरल विकल्प। रोजाना बस एक धूप जलाएं और पूजा के साथ साथ कम से कम अपने घर की हवा और पर्यावरण को शुद्ध करके प्रदूषण को दूर करें। बदले में बैक्टीरिया, वायरस आदि को मार कर अनेक बीमारियों से बचें। इसमें मौजूद जड़ी बूटियां अनेक प्रकार के बैक्टीरिया, वायरस जैसे कीटाणुओं का नाश करने और उनके संक्रमण के कारण होने वाली बीमारियों से बचाने में अत्यन्त सक्षम हैं। साथ ही फेफड़े, श्वसन तंत्र सम्बन्धी अनेक बीमारियों के उपचार में सहायक भी हैं।
6	**हवन सामग्री**		सभी रोगों के उपचार हेतु रोगनुसार तथा स्वस्थ्य अवस्था में किए जाने वाले यज्ञ की ऋतुओं के अनुसार कम से कम 5 किलो के आर्डर पर उपलब्ध

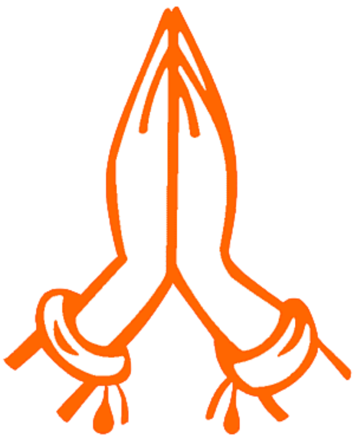

आवश्यक सूचना

यह भली प्रकार समझ लेना चाहिए कि केवल अग्नि में सामग्री जलाने का नाम 'यज्ञ चिकित्सा' नहीं है अपितु अन्य साधन जिनका विस्तृत विवरण 'यज्ञ चिकित्सा', 'आयुर्वेदिक प्राकृतिक चिकित्सा', 'आरोग्य शास्त्र' आदि पुस्तकों में हम यथास्थान दे चुके हैं, उन सबको मिलाकर ही सबके समूह का नाम 'यज्ञ चिकित्सा' है। किस रोगी के लिए, किस समय, कौन-कौन से साधनों की कितने अंश में आवश्यकता है – इसे ऐसा चिकित्सक तो बता ही सकेगा जिसने यज्ञ चिकित्सा का अनुभव प्राप्त किया है, पर उल्लिखित पुस्तकों को ध्यान पूर्वक पढ़ने से समझदार रोगी अथवा उसके घर का कोई और समझदार व्यक्ति भी चिकित्सा करा सकेगा।

इस पुस्तक में उल्लिखित नुसखों के अतिरिक्त यदि आपको किसी अन्य रोग की हवन सामग्री के नुसखे की आवश्यकता है तो हमें मेल या व्हाट्सएप सन्देश भेजकर निशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।